

श्रीमद्भनञ्जयकविवरचित—

नाम-माला ।

का

सरल हिन्दी अनुवाद ।

महरौनी (झांसी) निवासी घनश्यामदास जैन
प्रधान-अध्यापक सेठ स्व० हु० दि०
जैन महाविद्यालय—इन्दौर ।

प्रथमावृत्ति]

वीर नि० सं. २४४२

[मूल्य. ॥३॥ आने

नम्र निवेदन ।



इस पुस्तक के तथा इसके रचयिता के विषय में विशेष कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती क्योंकि इन दोनों से ही हमारे पाठक चिरपरिचित हैं-पर, इतना नम्र निवेदन कर देना आवश्यक है कि कारण वश इस पुस्तक के छपने में कई अशुद्धिएँ रह गई हैं उनको, विज्ञ पाठक शुद्धि पत्र देख कर पहले सुधार लें, पीछे पढ़ें, तो मैं उनका बहुत २ आभार मानूँगा ।

बन्शीधर जैन मास्टर

ललितपुर (भांसी)

शुद्धिपत्र ।

| अशुद्धि | शुद्धि | पत्रसंख्या । | अशुद्धि | शुद्धि | पत्रसंख्या । |
|-----------|-----------|--------------|----------------|----------------|--------------|
| वृमता | वसुमती | ३ | स्तंभरेम | स्तम्बरेमः | २४ |
| विश्वभरा | विश्वंभरा | ३ | धमनधिम | धमनीधम | २७ |
| वर्वत | पर्वत | ३ | प्ररश्य | प्रारश्य | २८ |
| शिखरी | शिखरी | ३ | परायात्मा | पुरयात्मा | ३२ |
| शिलेच्चय | शिलोच्चय | ३ | यौननिक | यौवनिक | ३४ |
| प्लग | प्लद्ग | ४ | निवृत | निर्वृत | ३७ |
| वनेचरः | वनेचरः | ५ | किसान(खितहड़) | वलभद्र | ३६ |
| ययस् | पयस् | ५ | पिशग्यपि | पिशङ्ग्यपि | ४२ |
| दीयता | दयिता | १० | प्रदेश | निदेश | ४२ |
| वैर्यरति | वैर्यराति | १२ | कञ्चित्किञ्चिन | किञ्चित्किञ्चन | ४३ |
| अर्चिगौ | अर्चिगौ | १३ | कञ्चित् | किञ्चित् | ४३ |
| मातण्ड | मार्तण्ड | १४ | किञ्चिन | किञ्चिन | ४३ |
| स्वद्यौः | स्वद्यौः | १६ | क्षणो | क्षणो | ४३ |
| सनाशीर | सुनाशीर | १६ | त्यगातन | न्यगातन | ४३ |
| सुत्रामन | सुत्रामन् | १६ | दंपानां | देवानां | ४५ |
| प्रथमाधिप | प्रमथाधिप | १६ | प्रस्तरोत्पल | प्रस्तरोपल | ४६ |
| वाणिसूदन | वीणसूदन | २० | उत्पल | उपल | ४६ |
| हृदयं | हृदयं | २२ | प्रगुण | प्रगुणा | ५६ |
| विधनकरः | विधनकरः | २२ | वृध्ने | व्रध्ने | ६२ |

७० पंज में ४५ वीं गाथा के पूर्वार्द्ध का ऐसा अर्थ है कि जिन और सिद्ध को परमात्मा तथा अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पाँचों को परमेष्ठी कहते हैं ।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

कविशिरोमणि श्रीमद्धनञ्जयविरचित-

नाम-माला

का

सरलहिन्दी-अनुवाद ।

मङ्गलाचरण ।

तन्नमामि परंज्योति-रवाङ्मनसगोचरम् ।

उन्मूलयत्यविद्यां यद्, विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥१॥

भाषार्थ—मैं (धनञ्जय) उस परज्योति—केवलज्ञान—को नमस्कार करता हूँ, जो वचनसे अकथनीय और मनसे अचिन्त्य है तथा जो ज्ञानको प्रगट करती है और अज्ञानको जडसे उखाड़ देती है ॥ १ ॥

भावार्थ—परंज्योति-केवलज्ञान-का माहात्म्य अद्भुतही है ।

ज्ञानी सदा ही संसार-परिभ्रमणकी निवृत्ति और तान्त्रिक उपकरणकी ।

इस प्रकार अतर्दीनके संसारभावनारूप उहे चित्रमें मृगापुत्र

द्वयं द्वितयमुभयं, यमलं युगलं युगं । •

युगमं द्दं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥२॥

भाषार्थ—द्वय, द्वितय, उभय, यमल, युगल, युग, युगम, द्दं, यम, और द्वैत (न०) ये सब युगलके नाम हैं वे जिनेन्द्र देवके चरणोंके युगल (जोड़) मेरी और आपकी रक्षा करें ॥ २॥

ऋषिर्यतिर्मुनिर्भिक्षु—स्तापसः संयतो व्रती ।

तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः ॥३॥

भाषार्थ—ऋषि, यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत, व्रतिन्, तपस्विन्, संयमिन्, योगिन्, वर्णिन् और साधु (पु०) ये सब मुनिके नाम हैं वे मुनि आपकी रक्षा करें ॥ ३ ॥

दीक्षितं मौढ्यं शिष्यं च, तमवन्तेवासिनं विदुः ।

कृतान्तागमसिद्धान्त—ग्रन्थाः शास्त्रमतः परम् ॥४॥

भाषार्थ—दीक्षित, मौढ्य, शिष्य और अन्तेवासिन् (पु०) ये चार छात्र (विद्यार्थी) के नाम हैं । कृतान्त, आगम, सिद्धान्त, ग्रन्थ (पु०) और शास्त्र (न०) ये सब शास्त्रके नाम हैं आगे पृथ्वी के नाम कहते हैं ॥ ४ ॥

भूमिर्भूः पृथिवी पृथ्वी, गव्हरी मेदिनी मही ।

धरा वसुमती धात्री, क्षमा विश्वंभराऽवनिः ॥५॥

वसुधा धरणी क्षोणी, क्षमा धरित्री चित्तिश्च कुः ।

कुम्भिनीलोर्व्वरा चोर्वी, जगती गौर्वसुन्धरा ॥६॥

भाषार्थ—भूमि, भू, पृथिवी, पृथ्वी, गव्हरी, मेदिनी,

मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वभरा, अरुणि, वसुधा, धरणी,
चोणी, क्षमा, धरित्री, चिति, कु, कुम्भिनी, इला, उर्वरा, उर्वी, जगती,
गो, वसुन्धरा, (स्त्री) ये सब पृथिवीके नाम हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

• तत्पर्याय-धरः शैलः, तत्पर्याय-पतिर्नृपः ।

तत्पर्याय-रुहो वृक्षः, शब्दमन्यञ्च योजयेत् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—इन पृथिवीके नामोंके आगे 'धर', शब्द जोड़
देनेसे भ्रवर्तकं और 'पति, शब्द जोड़ देनेसे राजाके तथा 'रुह'
शब्द जोड़देनेसे वृक्षके नाम हो जाते है जैसे भूमिधर, भूधर आदि,
भूमिपति, भूपति आदि और भूमिरुह, भूरुह आदि। विशेष बात यह है
कि धर पति और रुह, इनके समान अर्थवाले भृत्, ध्र तथा स्वामी, पाल
आदि शब्दोंको जोड़नेसे भी भूधर (पर्वत) आदिके नाम बन जाते
है जैसे महीध्र, महीभृत् आदि और भूस्वामी, भूपाल आदि ॥ ७ ॥

दरीभृदचलः शृङ्गी, पर्वतः सानुमान्गिरिः ।

नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—दरीभृत्, अचल, शृङ्गिन्, पर्वत, सानुमत, गार,
नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन्, त्रिककुत् और मरुत् (पु०) ये
सब पर्वतके नाम है ॥ ८ ॥

प्रस्थं पार्श्वं तटं सानु-मेखलोपत्यका तटी ।

नितम्बप्रन्तो दन्तश्च, तद्धानपि गिरिः स्मृतः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—प्रस्थं (पु० न०) पार्श्वं (न०) तट (तीन)
सानु (पु० न०) मेखला, उपत्यका, तटी (स्त्री) नितम्ब (पु० न०) अन्त

और दन्त (पु०) इन शब्दोंके आगे मत्तुप् प्रत्यय जोड़ देनेसे पर्वतके नाम हो जाते हैं जैसे प्रस्थवत्, पार्श्ववत्, तटवत्, सानुमत् इत्यादि ।

भावार्थ—प्रस्थ आदि शब्दोंके साथ मत्तुप् प्रत्यय जोड़ने से पर्वतके नाम हो जाते हैं वह मत्तुप् प्रत्यय यदि अकारान्त शब्दोंसे आगे होगा तो 'म' के स्थानमें 'व' हो जायगा इसलिए 'वत्' रहेगा और इकारान्त उकारान्त शब्दोंसे आगे होगा तो 'म' का म ही रहेगा तब सानुमत् इस तरहके रूप होंग ॥ ६ ॥

**राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः ।
ईश्वरो विश्वुरीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥ १० ॥**

भाषार्थ—राजन् अधिप, पति, स्वामिन्, नाथ, परिवृढ, प्रभु, ईश्वर, विश्वु, ईशान, भर्तृ, इन्द्र, इन, ईशितृ, पु०) ये सब नाम राजाके हैं ॥ १० ॥

**अनोकुहस्तरुः शाखी, विटपी फलिभो नगः ।
द्रुमोऽहिपः फलेग्राही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥ ११ ॥**

भाषार्थ—अनोकुह, तरु, शाखिन्, विटपिन्, फलिन्, नग, द्रुम अहिप, फलेग्राहिन्, पादप, अग और वनस्पति (पु०) ये सब वृक्ष (पेड़) के नाम हैं ॥ ११ ॥

**तत्पादार्थ-धरो ज्ञेयो, हरिर्वलिर्मुखः कृषिः ।
बानरो प्लगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥ १२ ॥**

भाषार्थ—इन वृक्षके नामोंके आगे 'चर' शब्द जोड़ देनेसे बन्दरके नाम हो जाते हैं जैसे अनोकुहचर, तरुचर, आदि (पु०)

तथा हरि, बलिमुख, कपि, वानर, प्लवग, गोलांगूल और मर्कट (पु०) ये भी वानर (बन्दर) के नाम हैं ॥ १२ ॥

विपिनं गहनं कक्ष-अरण्यं काननं वनं ।

कांतारभटवी दुर्गा, तच्छरः स्याद्दनेचरः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—विपिनः गहन कक्ष, अरण्य, कानन, वन, कातार (न०) अटवी (स्त्री) दुर्गा (न०) ये सब वनके नाम हैं इनके आगे 'चर, शब्द जोड़ देनेसे वनेचर (भील) के नाम हो जाते हैं ॥ १३ ॥

पुलिन्दः शबरु दस्यु-निषादो व्याधलुब्धकौ ।

धानुष्कोऽय किरातश्च सोऽरण्यानीचरः स्मृतः १४

भाषार्थ—पुलिन्द, शबर, दस्यु, निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क और किरात (पु०) ये सब अरण्यानीचर (भील) के नाम हैं ॥ १४ ॥

वार्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु, पाथोर्णः सलिलं जलम् ।
शरं वनं कुशं नीरं, तोयं जीवनमव्विषम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ—वार, वारि, क, पयस्, अम्भस्, अम्बु, पाथस्, अर्णस्, सलिल, जल, शर, वन, कुश, नीर, तोय, जीवन, (न०) अप (स्त्री) विष (न०) ये सब जल (पानी) के नाम हैं ॥ १५ ॥

तत्पर्याय-चरो मत्स्य-स्तत्पर्याय-प्रदो घनः ।

तत्पर्यायोद्भवं पद्मं, तत्पर्याय-धरोऽम्बुधिः ॥ १६ ॥

भाषार्थ—इन पानीके नामोंके आगे 'चर, शब्द जोड़ देनेसे मत्स्य (मछली) के, 'प्रद, शब्द जोड़ देनेसे मेघके, उद्भव, शब्दके जोड़ देनेसे कमलके और 'धर, शब्दके जोड़नेसे समुद्रके नाम हो जाते हैं जैसे

जलचर आदि (पु०), जलप्रद आदि (पु०), जलोद्भव आदि (पु० न०) और जलधर आदि (पु०) होते है ॥ १६ ॥

पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैशारिणो भ्रूषः ।

विशारी सफरो मीनः, पाठीनो निमिषस्तिमिः ॥ १७ ॥

भाषार्थ—पृथुरोमन्, षडक्षीण (पु०), यादस् (न०) वैशारिण, भ्रूष, विशारिन्, सफर, मीन, पाठीन, निमिष, और तिमि (पु०) ये सब मछली के नाम है ॥ १७ ॥

घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः ।

पर्जन्यो मुदिरोऽनभ्राद्, शंपा सौदामिनीतडित् ॥ १८ ॥

आकालिकी क्षणरुचि—विद्युत्तत्पतिरभ्युदः ।

निर्घातमशनिर्वज्र—मुल्काशब्दं च योजयेत् ॥ १९ ॥

भाषार्थ—घनाघन, घन, मेघ, जीमूत, (पु०) अभ्र (न०) बलाहक, पर्जन्य, मुदिर और अनभ्राज् (पु०) ये सब मेघके नाम है तथा शंपा, सौदामिनी, तडित्, आकालिकी, क्षणरुचि, और विद्युत् (स्त्री) इन विजलीके नामोंके आगे 'पति' शब्द जोड़ देनेसे मेघके नाम बन जाते है इसी तरह निर्घात (न०) अशनि (स्त्री पु०) वज्र (पु० न०) इन वज्रके नामोंके आगे तथा उल्का (गाज) शब्दके आगे पति शब्दको जोड़ देनेसे भी मेघके नाम बन जाते है ॥ १८ ॥ १९ ॥

परिषत्कर्दमः पंक-स्तज्जं तामरसं चिदुः ।

कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ॥ २० ॥

खरदंडं कौकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।

इन्दीवरं चारविन्दं, शतपत्रम् च पुष्करम् ॥ २१ ॥

स्यादुत्पलं कुवलय-मयं नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुदकैरवे ॥२२॥

भाषार्थ—परिषत्, कर्दम, पंक (पु०) ये तीन कीचड़के नाम है इन के आगे 'ज' जोड़ देनेसे तामरस कमल (न०) के नाम बन जाते हैं जैसे परिषज्ज, कर्दमज, पंकज और कमल, नलिन, पद्म, सरोज, सरसीरुह, खरदंड, कौकनद, पुण्डरीक, महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द, गतपत्र, पुष्कर, उत्पल और कुवलय (पु०न०) ये सब सासान्य कमलके नाम हैं और नीलाम्बुजन्मन्, इन्दीवर (न०) ये दो नलि कमलके तथा कुमुद और कैरव (न०) श्वेत कमलके नाम हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

व्रतती विशनी ज्ञेया, व्रतती वल्लरी लता ।
वल्लीनामानि योज्यानि, चारिधिर्दपर्यतेऽधुना ॥२३॥

भाषार्थ—इन कमलके नामोंके आगे मतुप् प्रत्यय जोड़ देनेसे कमलवती आदि विशनी-कमलिनी-(स्त्री) के नाम बन जाते हैं और व्रतति, व्रतती वल्लरी और लता (स्त्री) इन लताके नामोंको जोड़ देने से भी कमलिनी के नाम बन जाते हैं जैसे कमलव्रतति, कमलवल्लरी और कमललता । अब समुद्रके नामोंका वर्णन करते हैं ॥ २३ ॥

स्रोतस्विनी धुनी सिंधुः, स्रवती निम्नगाऽपगा ।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाम्नी तरंगिणी ॥ २४ ॥
तत्पातिश्च भवत्यब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः ।
अपारवारऽकूपारो, रत्नमीनाभिधाकरः ॥ २५ ॥

समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान्सागरोऽर्णवः ।

सीमोपकंठं तीरं च, पारंरोधोऽवधिस्तटम् ॥ २६ ॥

भाषार्थ—स्रोतस्त्रिनी, धुनी, सिन्धु, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी (स्त्री) नद, द्विरेफ (पु०) सरित्, तरंगिणी (स्त्री) ये सब नदीके नाम है इनके आगे 'पति, शब्द जोडदेनेसे समुद्रके नाम बन जाते है जैसे स्रोतस्त्रिनीपति आदि तथा अविधि, पारावार, अमृतोद्भव, अपारवार, अकूपार, रत्नाकर, मीनाकर, समुद्र, वारिराशि, सरस्वत्, सागर और अर्णव (पु०) ये सब समुद्रके नाम है और सीमोपकण्ठ, तीर, पार, रोधस् (न०) अवधि (पु०) तट (तीन) ये सब तीरके नाम है ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

भंगस्तरङ्गकल्लोलौ, वीचिरुत्कलिकावलिः ।

पाली वेला तटोच्छ्वासो, बिभ्रमोयमुदन्वतः ॥ २७ ॥

भाषार्थ—भग, तरंग, कल्लोल, (पु०) वीचि, उत्कलिका, और आभालि (स्त्री) ये सब लहरके नाम है और पाली, वेला (स्त्री) तटोच्छ्वास (पु०) ये तीन समुद्र के विभ्रम के नाम है ॥

भावार्थ—जलकी भौरको विभ्रम कहते है अर्थात् मण्डल के आकार जलके घूमनेको विभ्रम कहते हैं ॥ २७ ॥

मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः ।

पुमान् पुरुषो गोधो, धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः ॥ २८ ॥

भाषार्थ—मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, नृ, पुमस्, पुरुष, गोध और धव (पु०) ये सब पुरुषके नाम हैं इनके आगे

‘पति’ शब्द जोड़ देनेसे राजाके नाम बन जाते है जैसे मनुष्य-पति, नृपति, नरपति आदि (पु०) ॥ २८ ॥

भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः ।

भटोऽनुजीव्यनुचरः, शस्त्रजीवी च किंकरः ॥२९॥

भाषार्थ—भृत्य, भृतक, पत्ति, पदाति, पदग, अनुग, भट, अनुजीविन्, अनुचर, शस्त्रजीविन्, किङ्कर (पु०) ये सब नौकरके नाम है ॥२९॥

स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरुङ्गना ।

ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः ॥३०॥

नितम्बिन्यऽबला बाला, कामुकी वामलोचना ।

भीमा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतिश्चला ॥३१॥

भाषार्थ—स्त्री, नारी, वनिता, मुग्धा, भामिनी, भीरु, अंगना, ललना, कामिनी, योषित्, योषा, सीमन्तिनी, वधू, नितम्बिनी, अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनूदरी, रामा, सुन्दरी, युवति और चला, (स्त्री) ये सब सामान्य स्त्रीके नाम है ॥३०॥३१॥

भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम् ।

महिला मानिनी पत्नी, तथा दाराः पुरन्धयः ॥३२॥

भाषार्थ भार्या, जाया, जनि, कुल्या, (स्त्री) कलत्र (न०) गेहिनी, (स्त्री) गृह (न०) महिला, मानिनी, पत्नी (स्त्री) और दारा (पु०) ये सब अपनी विवाहिता स्त्रीके नाम है और पुरन्धी (स्त्री) यह पुत्र और पतिवाली स्त्रीका नाम है ॥ ३२ ॥

बल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दीयता प्रिया ।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी प्रणयिनी तथा ॥३३॥

भाषार्थ—बल्लभा, प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दीयता, प्रिया, इष्टा, प्रमदा, कान्ता, चण्डी और प्रणयिनी (स्त्री) ये सब प्यारी स्त्रीके नाम हैं ॥ ३३ ॥

सती पतिव्रता साध्वी, पतिवत्येकपत्यपि ।
मनस्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते ॥ ३४ ॥

भाषार्थ—सती, पतिव्रता, साध्वी, पतिवती, एकपती, मनस्विनी, आर्या (स्त्री) ये सब पतिव्रता (पतिभक्ता) स्त्रीके नाम हैं अब कुलटा (व्यभिचारिणी) स्त्रीके नाम कहते है ॥ ३४ ॥

बन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चली खला ।
स्पर्शाभिसारिका दूती, स्वैरिणी संपत्नी तथा ॥३५॥

भाषार्थ—बन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भू, पुंश्चली, खला, स्पर्शा, अभिसारिका, दूती, स्वैरिणी, संपत्नी (स्त्री) ये सब व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम है ॥ ३५ ॥

गणिका लज्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी ।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्वबल्लभा ॥३६॥

भाषार्थ—गणिका, लज्जिका, वेश्या, रूपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी, और सर्वबल्लभा (स्त्री) ये सब वेश्याके नाम हैं ॥ ३६ ॥

कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः ।

वल्लभोऽसुपतिः प्रेषान्, विटश्च रमणो वरः ॥३७॥

भाषार्थ—कान्त, इष्ट, दयित, प्रीत, प्रिय, कामिन्, कामुक, वल्लभ, असुपति, प्रेषस्, विट, रमण, वर (पु०) ये सब पतिके नाम हैं ॥३७॥

सवित्री जननी माता, जनकः सविता पिता ।

देहोऽपघनकायाङ्गं, वपुः सहननं तनुः ॥ ३८ ॥

कलेवरं शरीरं च, मूर्तिरस्माद्भवः सुतः ।

पुत्रः सुनुरपत्यं च, तुक् तोकं चात्मजः प्रजाः ॥३९॥

उद्वहस्तनयः पोता, दारको नन्दनोऽर्भकः ।

स्तनन्धयोत्तानशयौ, स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ॥४०॥

भाषार्थ—सवित्री, जननी, मातृ (स्त्री) ये तीन नाम माताके है और जनक, सवितृ और पितृ (पु०) ये तीन पिताके नाम है देह (पु०न०) अपघन, काय (पु०) अग, वपुस्, सहनन (न०) तनु (स्त्री) कलेवर, शरीर, (न०) मूर्ति (स्त्री) ये सब शरीरके नाम है इनके आगे 'भव' शब्द लगा देनेसे पुत्रके नाम हो जाते है और सुत, पुत्र, सुनु (पु०) अपत्य (न०) तुक् (पु०) तोक (न०) आत्मज (पु०) प्रजा (स्त्री) उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, स्तनन्धय, उत्तानशय (पु०) ये सब पुत्रके नाम है इनके आगे स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय जोड़ देनेसे दुहितृ (स्त्री) अर्थात् पुत्रीके नाम बन जाते है परन्तु अपत्य और तोक ये दो शब्द समानरूपमें रहतेहुए ही पुत्र और पुत्री दोनोंके बोधक होते है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

वयस्याऽऽली सहचरी, सध्रीची सवयाः सखी ।

आली विवर्जितं मित्रं, सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥४१॥

भाषार्थ—वयस्या, आली, सहचरी, सध्रीची, सवयस्, सखी (स्त्री) ये सब सखीके नाम है इनमें से आली शब्दको छोड़कर स्त्री बोधक प्रत्यय निकाल देनेसे शेष शब्द मित्रके वाचक बन जाते हैं और वे पुल्लिंग होते हैं। तथा मित्र (न०) सम्बन्ध, मित्रयुक्, सुहृत् (पु०) ये सब मित्रके नाम हैं ॥ ४१ ॥

सहकृत्वा सहकारी, सहायः समवायिकः ।

सनाभिः सगोत्रो बन्धुः, सोदर्यो वरजोऽनुजः ॥४२

कनीयानग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृजानी स्वसाऽनुजा ।

भर्तुः स्वसानानन्दा स्यान्मातुलानी प्रियाम्बिका ४३

भाषार्थ—सहकृत्वन्, सहकारिन्, सहाय, समवायिक, (पु०) ये सब सहायकके नाम हैं और सनाभि, सगोत्र, बन्धु, सोदर्य, (पु०) ये चार सगे भाई (सहोदर) के नाम हैं और अवरज, अनुज और कनीयम् (पु०) ये तीन अपने से छोटे भाईके नाम हैं, अग्रज, ज्येष्ठ (पु०) ये दो बड़े भाईके नाम हैं। भ्रातृजानी और स्वसृ (स्त्री) ये दो बहिनके नाम हैं। तथा अनुजा (स्त्री) छोटी बहिनका नाम है ननाट (स्त्री) यह नाम पतिकी बहिन का है और मातुलानी, प्रियाम्बिका (स्त्री) ये दो नाम मामी अर्थात् मामाकी स्त्रीके हैं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

वैर्यरतिरमित्रोऽरि-द्विद् सपत्नो द्विषद्विपुः ।

असेऽथो दुर्जनः शत्रु-द्विष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥४४॥

भाषार्थ—वेरिन्, अराति, अमित्र, अरि, द्विप्, सपत्न, द्विषत्
असेव्य, दुर्जन, शत्रु, दुष्ट, द्वेषिन्, खल, और अहित (पु०) ये सब
शत्रुके नाम है ॥ ४४ ॥

-दीधितिर्भानुश्शनोंशु-र्गभस्तिः किरणः करः ।
पादो रुचिर्मरीचिर्भा-स्तेजोऽर्चिर्गौद्युतिः प्रभा ॥ ४५ ॥
दीप्तिज्योतिर्महो धाम, रश्मिरूर्जोविभावसुः ।
शीतोष्णप्रायपूर्वत्वे, तद्वन्ताविन्दुभास्करौ ॥ ४६ ॥

भाषार्थ—दीधिति (स्त्री) भानु, उश्नं, अंशु, गर्भस्ति, किरण,
कर, पाद (पुं०) रुचि (स्त्री) मरीचि (स्त्री. पु०) भास् (स्त्री)
तेजस्, अर्चिष् (न०) गो, (पु० स्त्री) द्युति, प्रभा, दीप्ति,
(स्त्री) ज्योतिष्, महस् धामन्, (न०) रश्मि (पु०) ऊर्जस्
(न०) विभावसु (पुं०) ये सब किरणके नाम है । इन नामोंके
पीछे शीत और आगे मतुप् प्रत्यय जोड़देनेसे चन्द्रमाके तथा पीछे
उष्ण और आगे मतुप् प्रत्यय जोड़देनेसे सूर्यके नाम बन जाते हैं,
जैसे शीतदीधितिमतु और उष्णदीधितिमतु ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

शशी विधुः सुधासूतिः, कौमुदी कुमुदप्रियः ।
कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः, कान्तिमानौपधीश्वरः ॥ ४७ ॥

भाषार्थ—शशिन्, विधु, सुधासूति, कौमुदिन्, कुमुदप्रिय,
कलाभृत् चन्द्रमस्, चन्द्र, कान्तिमतु और औपधीश्वर (पु.) ये सब
नाम चन्द्रमा के हैं ॥ ४७ ॥

उडूनि भानि तारंर्त्तं, नक्षत्रं तत्पति निशा ।
क्षणादा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षपाकरः ॥ ४८ ॥

भाष्य—उडु भ (न०) तारा (स्त्री) ऋच, नक्षत्र (न०) ये सब नक्षत्रके नाम हैं । इनके आगे 'पति, जोड़ देनेसे चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, जैसे नक्षत्रपति आदि तथा निशा, चण्डा, रजनी (स्त्री) नक्त (अव्यय) दोषा, श्यामा, क्षपा (स्त्री) ये सब रात्रिके नाम हैं । इनके आगे 'कर, जोड़ देनेसे भी चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, जैसे निशाकर, क्षपाकर आदि ॥ ४८ ॥

तरणिस्तपनो भानु-ब्रध्नः पृषाऽर्यमा रविः ।

तिग्मः पतंगो शुमणि-मार्तण्डोऽर्कौ ग्रहाधिपः ॥ ४९ ॥

इनः सूर्यस्तमो ध्वान्त-स्तिमिरारिर्विरोचनः ।

दिनं दिवाह दिवसो, वासरस्तत्करश्च सः ॥ ५० ॥

चक्रवाकाब्जपर्याय-बन्धुः कुमुदविप्रियः ।

यमुनायमकानीन-जनकः सविता मतः ॥ ५१ ॥

भाष्य—तरणि, तपन, भानु, ब्रध्न, पूषन्, अर्यमन्, रवि, तिग्म, पतङ्ग, शुमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, इन, सूर्य, तमोरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि और विरोचन (पुं०) ये सब सूर्यके नाम हैं । दिन (न०) दिवा (अव्यय) अहन् (न०) दिवस, वासर (पु०) इन दिनोंके नामोंके आगे 'कर, जोड़ देनेसे भी दिनकर आदि सूर्यके नाम हो जाते हैं कोक, चक्र, चक्रवाक और रथाग (पु०) इन चक्रके नामोंके आगे और पीछे लिखे हुये कमलके नामोंके आगे बन्धु, शब्द जोड़ देनेसे भी सूर्यके नाम बन जाते हैं, जैसे कोकबन्धु, चक्रबन्धु आदि, और कमलबन्धु आदि तथा कुमुदविप्रिय (पु०) तथा यमुनाजनक, यमजनक कानीनजनक (पु०) ये सवितृ (सूर्य) के नाम हैं ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरंगमः ।
सप्तिरर्वा हरी रथ्यः, सप्ताद्यश्वो मयूखवान् ॥५२॥

भाषार्थ—वाह, अश्व, तुरग, वाजिन्, हय, धुर्य, तुरगम, सप्ति, अ-
र्वन्, हरि, रथ्य (पुं०) ये सब घोड़ेके नाम हैं । इनके पीछे 'सप्त, शब्द
जोड़देनेसे मयूखवत् (सूर्य) के नाम होजाते है, जैसे सप्तवाह
सप्ताश्व (पुं०) आदि ॥ ५२ ॥

खं विहायो वियद्वयोम, गगनाकाशमम्बरम् ।
द्यौर्नभोऽभ्राऽन्तरिक्षं च, मेघवायुपथोप्यथ ॥५३॥

भाषार्थ—ख (न०) विहायस् (पुं०न०) वियत्, व्योमन्, गगन,
आकाश, अम्बर (न०) द्युस् (दिव्) नभस्, अभ्, अन्तरिक्ष (न०)
मेघपथ और वायुपथ (पुं०) ये सब आकाशके नाम हैं ॥ ५३ ॥

तच्चरः खेचरस्तद्गः, पक्षी पत्री पतत्र्यपि ।
शकुन्तिः शकुनिर्विश्व, पतंगो विष्करो वयः ॥५४॥

भाषार्थ—इन आकाशके नामोंके साथ 'चर' शब्दको जोड़देनेसे
खेचर, विहायश्चर आदि विद्याधरके नाम बन जाते है और 'ग' शब्द
जोड़देनेसे खग वगैरह तथा पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, शकुन्ति,
शकुनि, वि, पतंग, विष्किर, (पुं०) वयस् (न०) ये सब पक्षीके
नाम है ॥ ५४ ॥

जाङ्गलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्प्रियः ।
यातुधानस्तथा रक्षो, रात्र्यादि-चर इष्यते ॥५५॥

भाषार्थ—जांगल, पिशित, मांस, पल (न०) पेशी (स्त्री) ये सब

मांसके नाम हैं । इनके आगे 'प्रिय, शब्द जोड़देनेसे मांसप्रिय जांगलप्रिय आदि, और यातुधान (पुं०) रक्षस (न०) तथा रात्रिके नामोंके आगे 'चर, जोड़देनेसे रात्रिचर, निशाचर आदि भी राक्षस के नाम बन जाते है ॥ ५५ ॥

सुतोऽदितेस्तडित्त्वान्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः ।
स्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्वासस्त्रिदशो मतः ५६

भाषार्थ—अदिति सुत, तडित्त्वत्, सेन्द्र, देव, सुर, अमर, (पुं०) ये देवके नाम हैं और स्वर (अव्यय) द्युम् (स्त्री) . नाक (पु.) इन स्वर्गके नामों के आगे वास, शब्द जोड़देनेसे भी देवके नाम होजाते है जैसे स्वर्वास, इत्यादि ॥ ५६ ॥

तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च, सुनाशीरः शतक्रतुः ।
प्राचीनवर्हिः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः ॥ ५७ ॥
शत्रुर्वलस्य गोत्रस्य, पाकस्य नमुचेरमि ।
वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः ॥ ५८ ॥
किङ्गो जाश्चाप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः ।
मरुतश्च मरुत्वांश्च, वृषा चैरावणाधिपः ॥ ५९ ॥
शतमन्युस्तुराषाद् च, पुरुहूतश्च कौशिकः ।
शक्रदोऽथ मघवान्पुलोमास्त्रिर्मरुत्सखः ॥ ६० ॥

भाषार्थ—देवके नामोंके आगे पति, शब्द जोड़देनेसे इन्द्रके नाम बन जाते हैं जैसे त्रिदशपति, देवपति आदि तथा शक्र, इन्द्र, नाशीर, शतक्रतु, प्राचीनवर्हि, सुत्रामन्, वज्रिन्, आखण्डल, हरि,

बलशत्रु, गोत्रशत्रु, पाकशत्रु, नमुचिशत्रु, वृत्रहन्, सहस्राक्ष
गीर्वाणेश, पुरन्दर, विडौजम्, अप्सरोनाथ, वासव, हरिवाहन, मरुत,
मरुत्वत्, वृषन्, ऐरावणाधिप, शतमन्यु, तुरापाह, पुरुहूत, कौशिक,
शङ्कन्दन, मघवत्, पुलोमारि, और मरुत्सख (पु०) ये सब इन्द्र
के नाम हैं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दत्तकन्या तथा हरित् ।
तत्पर्यायपरं योज्यं, प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥ ६१ ॥

भाषार्थ—काष्ठा, ककुब्, दिग्, आशा, दत्तकन्या, और
हरित् (स्त्री) ये सब दिशाओं के नाम हैं इनके आगे पाल, शब्द
जोड़ देनेसे काष्ठापाल दिक्पाल आदि दिक्पालके, और 'गज'
शब्द जोड़ देनेसे दिग्गज आदि दिग्गज के तथा अम्बर, शब्द
जोड़ देने से दिग्म्बर, काष्ठाम्बर आदि दिग्म्बर (मुनि) के
नाम हो जाते हैं वे सब पुङ्गव होते हैं ॥ ६१ ॥

पवनः पवमानश्च, वायुर्वातोऽनिलो मरुत् ।
समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः ॥ ६२ ॥
नभस्वान् मातरिश्वा च, वरेण्युर्जवनश्चलः ।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय-पुत्रौ, भीमाञ्जनात्मजौ ॥ ६३ ॥

भाषार्थ—पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत्, समी-
रण, गन्धवाह, श्वसन, सदागति, नभस्वत्, मातरिश्वन्, वरेण्यु,
जवन, चल और प्रभञ्जन (पु०) ये सब वायु (हवा) के नाम
हैं इनके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे पवनपुत्र आदि भीम तथा
हनूमानके नाम हो जाते हैं और वे पुङ्गव होते हैं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

तत्सखोऽग्निः शिखी वन्धिः, पावकश्चाशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेताः सप्तार्चि-जातवेदास्तनूनपात् ॥६४॥

स्वाहापतिर्हुताशश्च, ज्वलनो दहनोऽनलः ।
वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः ॥६५॥

वृषाकपिः समीगर्भो, हव्यवाहो हुताशनः ।
तदादि-सुनुः सेनानीः, स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥६६॥

कार्तिकेयो विशाखश्च, कुमारः परमुखो गुहः ।
शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च, स्वामी शरवणोद्भवः ॥६७॥

भावार्थ—पवनके नामांके आगे 'सख' शब्द, जोड़ देने से पवनसख आदि और अग्नि, शिखिन्, वन्धि, पावक, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस्, (पु०) सप्तार्चिप् (न०) जातवेदस्, तनूनपात् स्वाहापति, हुताश, ज्वलन, दहन, अनल, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु, वृषाकपि, समीगर्भ, हव्यवाह, और हुताशन (पु०) ये सब अग्निके नाम हैं इनके आगे 'सुनु' शब्दके जोड़ देनेसे अग्नि-सुनु आदि तथा सेनानी, स्कन्द, शिखिवाहन, कार्तिकेय, विशाख, कुमार परमुख, गुह, शक्तिमत्, क्रौञ्चभेदिन्, स्वामिन्, और शरवणोद्भव (पु०) ये सब कार्तिकेयके नाम हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

तत्पिता शंकरः शम्भुः, शिवः स्यात्पुनर्हेश्वरः ।
ज्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥६८॥
त्रिपुरारिविशालाक्षो, गिरीशो नीललोहितः ।
स्नेन्दुमौलियज्ञारि-स्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥ ६९ ॥

उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः ।

उमापतिर्विरूपाक्षो, विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥ ७० ॥

भाषार्थ—कार्तिकेय के नामोंके आगे 'पितृ' शब्द जोड़ देने

से सेनानीपितृ आदि महादेवके नाम हो जाते है तथा शंकर, शम्भु, शिव, स्यागु, महेश्वर, त्र्यम्बक, धूर्जटि, शर्व, पिनाकिन्, प्रवृत्ताधिप, त्रिपुरारि, विशालाक्ष, गिरीश, नीलजोहित, रुद्र, इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, उग्र, शूलिन्, कपालिन्, शिपिविष्ट, भव, हर, उमापति, विरूपाक्षा, विश्वरूप, और कपर्दिन् (पु०) ये भी महादेव के नाम है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

भागीरथी त्रिपथगा, जान्हवी हिमवत्सुता ।

मन्दाकिनी द्युपर्याय—धुनी गङ्गा नदीश्वरी ॥ ७१ ॥

भाषार्थ—भागीरथी, त्रिपथगा, जान्हवी, हिमवत्सुता, मन्दाकिनी और द्युस (स्वर्ग) के नामोंके आगे 'धुनी' शब्द जोड़ देने से स्वर्धुनी, स्वर्गधुनी, द्युधुनी आदि तथा गंगा, नदीश्वरी, (स्त्री) ये सब गंगा के नाम है, नदीश्वरी के स्थान में नदीश्वर ऐसा भी पाठ हो सकता है जिससे यह अर्थ निकलता है कि इन गंगाके नामोंके आगे 'ईश्वर' शब्द जोड़ देनेसे भी महादेव के नाम बन जाते है ॥ ७१ ॥

विधिर्विधा विधाता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः ।

पद्मपर्याय—योनिश्च, पितामहविरञ्चिनौ ॥ ७२ ॥

हिरण्यगर्भः सृष्टा च, प्रजापतिस्सहस्रपात् ।

ब्रह्मात्मभुरनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रो हि नारदः ॥ ७३ ॥

भाषार्थ—विधि, वेवसु, विधातृ, द्रुहिण, अंज, चतुर्मुख, (पु०) ये ब्रह्माके नाम है और कमलके नामोंके आगे 'योनि' शब्द जोड़ देनेसे भी कमलयोनि. आदि ब्रह्माके नाम बन जाते हैं तथा पितामह निरञ्चिन, हिरण्यगर्भ, सृष्टृ, प्रजापति, सहस्रपात्, ब्रह्मन्, आत्मन्, अनन्तात्मन्, और क (पु०) ये सब ब्रह्माके नाम है इनके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे विधिपुत्र आदि नारदके नाम हो जाते हैं ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

कृष्णो दामोदरो विष्णु-रूपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।

केशवश्च हृषीकेशः, शार्ङ्गी नागायणो हरिः ॥७४॥

केशी मधुर्वल्लिर्वाणो हिरण्यकशिपुर्भुरः ।

तदादि-सूदनः सौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोक्षजः ॥७५॥

गोविन्दो वासुदेवश्च, लक्ष्मीः श्रीर्गोमिनीन्दिरा ।

तत्पतिः शैलभूम्यादि-धरश्चक्रधरस्तथा ॥ ७६ ॥

भाषार्थ—कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र, पुरुषोत्तम, केशव हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण, हरि, केशिन्, मधुसूदन, वलिसूदन, वाणिसूदन, हिरण्यकशिपुसूदन, मुरसूदन, सौरि, पद्मनाभ, अधो-क्षज, गोविन्द, वासुदेव (पु०) ये सब कृष्णके नाम हैं लक्ष्मी, श्री, गोमिनी, इन्दिरा (स्त्री) ये नाम लक्ष्मी अर्थात् कृष्णकी स्त्री के हैं इनके आगे 'पति' शब्द जोड़ देनेसे लक्ष्मीपति आदि और पर्वत, भूमि आदिक नामोंके आगे 'धर' शब्द जोड़ देनेसे 'पर्वतधर भूधर' आदि तथा चक्रधर (पु०) ये भी कृष्णके नाम हैं ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

तत्पुत्रो मन्मथः कामः, सूर्पकारिरनन्यजः ।

कायपर्याय-रहितो, मकरो मकरध्वजः ॥ ७७ ॥

भाषार्थ—इन कृष्णके नामोंके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे कृष्णपुत्र आदि तथा मन्मथ, काम, सूर्पकारि, अनन्यज, तथा काय (शरीर) के नामोंके आगे 'रहित' शब्द जोड़ देनेसे काय रहिते (अकाय) शरीररहित (अशरीर) आदि और मकर, मकरध्वज (पु०) ये सब कामके नाम हैं ॥ ७७ ॥

शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः ।

इषुः काण्डं क्षुरप्रञ्च, नाराचं तोमरं खगः ॥ ७८ ॥

भाषार्थ—शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु, (मु०) काण्ड, क्षुरप्र, नाराच, तोमर, (न०) खग (पु०) ये बाण के नाम हैं ॥ ७८ ॥

कार्मुकं धन्व चापं च, धर्मं कोदण्डकं धनुः ।

शिलीमुखादेरासनं, तत्कोटिमटिनीं विदुः ॥ ७९ ॥

भाषार्थ—कार्मुक, धन्वन्, (न०) चाप, धनुष (पुं० न०) धर्म, कोदण्डक, और शिलीमुख आदि बाणके नामोंके आगे आसन शब्दके जोड़ देनेसे शिलीमुखासन, शरासन आदि (न०) धनुषके नाम हो जाते है और धनुषकी कोटि (कोण) को अटनी कहते है ॥ ७९ ॥

पुष्पं सुमनसः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ ।

प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं, त, दाद्यस्त्रशरः स्मरः ॥ ८० ॥

भाषार्थ—पुष्प, सुमनस; फुल्ल, लतान्त (न०) प्रसव उद्गम (पु०) प्रसून, कुसुम (न०) ये पुष्पके नाम है इनके आगे अस्त्र और शरके नाम जोड़ देनेसे स्मर (काम) के नाम बन जाते है ॥ ८० ॥

स्वान्तमास्विनतं चित्तं, चेतोऽन्तःकरणं मनः ।
हृदयं विशिखाकृतं, मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥८१॥

भाषार्थ—स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस्, अन्तःकरण, मनस्, हृदय, विशिख, आकृत (न०) ये सब मनके नाम है इनके आगे भव अथवा उद्भव, शब्द जोड़ देनेसे मनोभव स्वान्तभव आदि (पु०) मार (कामदेव) के नाम बन जाते है ॥ ८१ ॥

मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलिभृङ्गः शिलीमुखः ।
भूमरः पट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ॥८२॥

भाषार्थ—मौर्वी. जीवा (स्त्री) गुण (पु०) गव्या, ज्या (स्त्री) ये सब धनुषकी डोरीके नाम है अलि, भृंग, शिलीमुख भूमर, पट्पद, द्विरेफ, मधुव्रत (पु०) ये सब भूमरके नाम है ॥८२॥

मौर्व्यादिप्रान्तमाल्यादि, कंदर्पस्यैक्षवन्धनुः ।
हेतिरस्त्रायुधं शस्त्र-पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः ॥८३॥

भाषार्थ—अलि आदि भूमरके नामोंके आगे मौर्वी आदि शब्दों को जोड़ देनेसे अलिमौर्वी आदि भी कामके नाम बन जाते हैं कामके धनुषकी ऐक्षव (न०) कहते है हेति (स्त्री) अस्त्र, आयुध, शस्त्र (न०) ये चार हथियारके नाम हैं, पुष्पके

नामोंके आगे इन हथियारके नामोंको जोड़ देनेसे पुष्पहेति आदि कामके नाम होजाते है ॥ ८३ ॥

ध्वजा पताका केतुश्च, चिन्हं तद्वैजयन्त्यपि ।

तत्तदन्तो भषाद्यादिः, शम्भोर्विध्नकरः स्मरः ॥८४॥

भाषार्थ—ध्वजा, पताका (स्त्री) केतु, (पुं०) चिन्ह (न०) वैजयन्ती (स्त्री) ये पाच ध्वजा के नाम हैं, मछलीके नामोंके आगे इनको जोड़ देनेसे भषध्वज, भपकेतु आदि (पु०) और शंकर (महादेव) के नामोंके आगे विध्नकर, शब्द जोड़ देनेसे शकर विध्नकर आदि भी कामके नाम हो जाते है ॥ ८४ ॥

कौक्षेयकोऽसिर्निस्त्रिशः, कृपाणः करवालकः ।

तरवारिर्मंडलाग्रं, खड्गनामावलिं विदुः ॥८५॥

• भाषार्थ—कौक्षेयक, असि, निस्त्रिश, कृपाण, करवालक, तरवारि, (पु०) मण्डलाग्र (न०) ये सब खड्ग (तलवार) के नाम है ॥ ८५ ॥ •

अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः ।

ध्वजिनी पृतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी ॥८६॥

भाषार्थ—अक्षौहिणी (स्त्री) बल, अनीक (न०) वाहिनी (स्त्री) साधन (न०) चमू, ध्वजिनी, पृतना, सेना (स्त्री) सैन्य (न०) दण्ड (पु०) वरूथिनी (स्त्री) ये सब सेना के नाम है ॥ ८६ ॥

कदनं समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम् ।

संग्रामं संपरायाजि, संयदाहुर्महाहवम् ॥८७॥

भाषार्थ—कदन, समर, युद्ध, संयुग, कलह, रण, सग्राम (न०) संपराय. आजि (पु०) संयत्, महाहव (न०) ये सब युद्धके नाम है ॥ ८७ ॥

गजो मतङ्गजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभमतङ्गमाः ॥ ८८ ॥
शुंडालः सामजो नागो, मातङ्गः पुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता यान्ता निषाद्यपि ॥ ८९ ॥

भाषार्थ—गज, मतङ्गज, हस्तिन्, वारण, अनेकप, करिन्, दन्तिन्, स्तम्बेरम, कुम्भिन्, द्विरद, इभ, मतङ्गम, शुंडाल, सामज नाग, मातङ्ग, पुष्करिन्, द्विप, करेणु, और सिन्धुर (पु०) ये सब हाथी के नाम है इनके आगे यन्तृ, यातृ और निषादिन् (पु०) ये तीन शब्द जोड़ देने पर गजयन्तृ, गजयातृ और गजनिषादिन् आदि महावतके नाम बन जाते हैं ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

नागाधरिः कंठीरवो, मृगेन्द्रः केशरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरः शार्दूलः, शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ॥ ९० ॥

भाषार्थ—हस्ती (हाथी) के नामोंके आगे अरि. शब्द जोड़ देने से गजारि नागारि आदि तथा कण्ठीरव, मृगेन्द्र, केशरिन्, हरि (पु०) ये सब सिंह के नाम है व्याघ्र, चमूर (पु०) ये दो नाम तेंदुए के हैं शार्दूल, शरभ, अष्टापद और अष्टपात् (पु०) ये चार अष्टापद के नाम हैं ॥ ९० ॥

क्रोडो चराहो दंष्ट्री च, घृष्टिः पोत्री च शूकरः ।
उष्ट्रो मघः शृङ्खलिकाः, करभः शीघ्रगासुकः ॥ ९१ ॥

भाषार्थ—क्रोड, वराह, दंष्ट्रिन्, वृष्टि, पोत्रिन्, और शूकर (पु०) ये सब सुअर के नाम है उष्ट्र, मय, शृंखलिक, करभ और शीघ्रगामुक (पु०) ये सब ऊँटके नाम है ॥ ६१ ॥

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वान् पुरोगतिः ।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्कुरो रात्रिजागरः ॥६२॥

भाषार्थ—कौलेयक, सारमेय, मण्डल, श्वन्, पुरोगति, जिह्वाप, ग्रामशार्दूल, कुक्कुर और रात्रिजागर (पु०) ये सब कुत्ते के नाम है ॥ ६२ ॥

हेमं चाष्टापदं स्वर्णं, कनकार्जुनकाञ्चनम् ।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम् ॥६३॥
तपनीयं कलधौतं, कार्त्तस्वरं शिलोद्भवम् ।
रूप्यं रजतं गुल्लिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ॥६४॥

भाषार्थ—हेमन्, अष्टापद, स्वर्णं, कनक, अर्जुन, काञ्चन, सुवर्णं, हिरण्य, भर्मन्, जातरूप, हाटक, तपनीय, कलधौत कार्त्तस्वर और शिलोद्भव (न०) ये सब सुवर्ण (सोने) के नाम हैं रूप्य, रजत (न०) गुल्लिका (स्त्री) ये तीन चाँदीके नाम हैं शुक्तिज और मौक्तिक (न०) ये दो मोती के नाम हैं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थं रा द्रविणं धनम् ।
कस्वरं तत्पति प्राहुः, कुबेरं चैकपिङ्गलम् ॥६५॥

वैश्रवणं राजराज-मुत्तराशापतिं तथा ।

अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्यायदायदम् ॥ ६६ ॥

भाषार्थ—वित्त, वस्तु, वसु, द्रव्य (न०) स्व, (पु०न०) अर्थ, रं (पु०) द्रविण, धन, कस्वर (न०) ये सब धनके नाम हैं इनके आगे 'पति, शब्द जोड़ देनेसे धनपति वंगरा और कुवेर, एकापिगल, वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय श्रीद तथा धनके नामोंके आगे 'दाय और द, शब्द जोड़ देनेसे धनदाय, धनद आदि भी कुवेरके नाम बन जाते हैं और वे सब पुस्लिंग होते हैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

राष्ट्रं जनपदो निग्रो, जनान्तो विषयः स्मृतः ।

पूरः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुटभेदनम् ॥ ६७ ॥

भाषार्थ—राष्ट्र (न०) जनपद, निग्र, जनान्त, विषय (पु०) ये देशके नाम हैं पुर (स्त्री) पुर (न०) पुरी, नगरी (स्त्री) पत्तन, पुटभेदन (न०) ये सब नगरीके नाम हैं ॥ ६७ ॥

वक्त्रं लपनमास्थं च, वदन्ति वदनं मुखम् ।

आननं श्रवणं श्रोत्रं, श्रवः कर्णं श्रुतिं विदुः ॥ ६८ ॥

भाषार्थ—वक्त्र, लपन, आस्थ, वदन, मुख, आनन, (न०) ये मुखके नाम हैं श्रवण, श्रोत (न०) श्रव (पु०) कर्ण (न०) श्रुति (स्त्री) ये सब कानके नाम हैं ॥ ६८ ॥

दृगक्षि चक्षुर्नयनं, दृष्टिर्नयनं विलोचनम् ।

कटाक्षं केकरापाङ्गं, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥ ६९ ॥

भाषार्थ—दृश, (स्त्री) अक्षि, चक्षुष्, नयन (न०)

दृष्टि (स्त्री) नेत्र, विलोचन (न०) ये सत्र नेत्रके नाम हैं कटाक्ष
(पु० न०) केकर, अपाङ्ग, विभ्रम (पु०) ये नेत्रके विकार
(निजारे) के नाम है ॥ ६६ ॥

दो-दोषा च भुजो बाहु; पाणिहस्तः करस्तथा ।
प्राहुर्बाहुशिरोंसं च, हस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥ १०० ॥

भाषार्थ—दोस्, (पु०) दोषा (स्त्री) भुज, बाहु, (स्त्री. पु०)
ये चार बांहके नाम है पाणि, हस्त, और कर (पु०)
ये तीन हाथके नाम है बाहुशिरस् और अस, (न०) ये दो
कन्धेके नाम है और हस्तशाखा अर्थात् हस्तके नामोंके आगे
शाखा 'शब्द' जोड़ देनेसे हस्तशाखा आदि और कराङ्गुलि
(स्त्री०) ये हाथकी अङ्गुलीके नाम है ॥ १०० ॥

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो, वर्णितो दशनच्छदः ।
शिरोधरो गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनीधमः ॥ १०१ ॥

भाषार्थ—दन्तवास, अधर, ओष्ठ, और दशनच्छद (पु०)
ये चार ओठके नाम है शिरोधर, गल (पु०) ग्रीवा (स्त्री)
कण्ठ, धमनीधम, (पु०) ये पाच गलेके नाम है ॥ १०१ ॥

नासा घ्राणसुरो वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् ।
स्तनः पयोधरो कुचो, वक्षोज इति वर्णितः ॥ १०२ ॥

भाषार्थ—नासा (स्त्री) घ्राण (न०) ये दो नासिका
(नाक) के नाम है उरस् और वक्षस् (न०) ये दो छातीके

नाम है कुक्षि (स्त्री) यह एक कूख का नाम है जठर और उदर (न०) ये दो पेटके नाम है स्तन, पयोधर, कुच, और वक्षोज (पु०) ये चार स्तनके नाम हैं ॥ १०२ ॥

कटिनितम्बः श्रोणिश्च. जघनं जानु जन्हु च ।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदे विदुः ॥१०३॥

भाषार्थ—कटि (स्त्री) कमर को कहते हैं स्त्रीकी कमर के पिछले भाग को नितम्ब (पु०) कहते हैं और अगले भाग को श्रोणि (स्त्री) और जघन (न०) कहते हैं जानु और जन्हु (न०) ये दो घुटनेके नाम है चलन (न०) चरण, पाद, (पुं०न०) क्रम, अङ्घ्रि (पु०) ये पांच चरणके नाम है ॥१०३॥

शिरो मूर्द्धात्तमाङ्गं कं, प्रारभ्य प्रेरितेरितम् ।
वाग्बचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती ॥१०४॥

भाषार्थ—शिरस् (न०) मूर्द्धन् (पुं०) उत्तमांग, क (न०) ये चार शिरके नाम है प्रारभ्य, प्रेरित और ईरित (न०) ये तीन प्रेरित हुई वस्तुके नाम है वाच् (स्त्री) वचस्, वचन (न०) वाणी, भारती, गिर् और सरस्वती ये सात वाणीके नाम है ॥१०४॥

सिंहद्विपघने गर्जा, हेपाऽश्वे वृंहितं गजे ।
स्फोत्कृतं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ॥१०५॥

भाषार्थ—सिंह. हाथी, और मेघ की बोली को गर्ज (पु०) कहते हैं घोड़े के हीसने को हेपा (स्त्री) तथा हाथीकी बोली को वृंहित (न०) भी कहते हैं, गाय और हाथी के बच्चे की बोली

को स्फीकृत' (न०) और मेघकी गर्जनाको स्तनित भी कहते हैं ॥ १०५ ॥

स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे, भटे घृष्टौ च हूङ्कृतम् ।
शीत्कृतं मणितं कामे, खूत्कृतं च शृङ्खलायुधे ॥ १०६ ॥

भाषार्थ—स्यके शब्दको चीत्कृत (न०) तथा मन्त्र, योषा और शूकर की आवाज को हूङ्कृत कहते हैं मैथुनके शब्द को शीत्कृत और मणित (न०) कहते हैं । शृङ्खला और आयुध (हथियार) इनके शब्द को खूत्कृत (न०) कहते हैं ॥ १०६ ॥

मञ्जीरकं तुलाकोटि, नूपुरं तत्र भङ्कृतम् ।
झाङ्कृतं मरुतिक्रोञ्च-हंसयोः क्रेङ्कृतं मतम् ॥ १०७ ॥

भाषार्थ—मञ्जीरक, तुलाकोटि, नूपुर (न०) ये तीन विछुओं के नाम हैं इनके शब्द को भङ्कृत (न०) कहते हैं वायुके शब्द को भाङ्कृत (न०) और क्रोञ्च तथा हंसके शब्दको क्रेङ्कृत (न०) कहते हैं ॥ १०७ ॥

प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतं ।
स्थितं दशमीस्थं च, परासुं च मृतं विदुः ॥ १०८ ॥

भाषार्थ—प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, दृष्ट, परिचित, और स्मृत (न०) ये छह, जानी हुई वस्तुके नाम हैं संस्थित, दशमीस्थ और परासु तथा मृत (तीन) ये चार मरे हुए पुरुष आदि के नाम हैं ॥ १०८ ॥

खेदो द्वेषोऽप्यमर्षश्च, रुद् कोपक्रोधमन्यवः ।

हर्षः प्रमोदः प्रमदो, सुतोषानन्दमुत्सवः ॥१०६॥

भाषार्थ—खेद, द्वेष, अमर्ष, रुद्, कोप, क्रोध, मन्यु (पु०)

ये सात. क्रोधके नाम है, हर्ष, प्रमोद प्रमद, (पु०) मुद्, (स्त्री) तोष, आनन्द, उत्सव (पु०) ये सात, हर्षके नाम हैं ॥ १०६ ॥

कृपानुकम्पानुक्रोशो, हन्तोक्तिः करुणा दया ।

शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाशयः ॥११०॥

भाषार्थ—कृपा, अनुकम्पा (स्त्री) अनुक्रोश (पु०)

हन्तोक्ति, करुणा, दया. (स्त्री) ये छह, दया के नाम हैं, शेमुषी, धिषणा, प्रज्ञा, मनीषा, धी (स्त्री) आशय (पु०) ये छह बुद्धिके नाम हैं ॥ ११० ॥

प्राज्ञो मेधादिभान्विद्वानभिरूपो विधक्षथः ।

पण्डितः सूरिराचार्यो, वाग्मीनैयायिकः स्मृतः ॥१११॥

भाषार्थ—प्राज्ञ और बुद्धिके नामोंके आगे मनुप् प्रत्यय जोड़ देने से शेमुषीमत्, धिषणावत्, प्रज्ञावत् मनीषावत्, धीमत्, आशयवत्, मेधावत्, विद्वत्, अभिरूप-विचक्षण, पण्डित, सूरि, आचार्य वाग्मिन्, और नैयायिक (पु०) ये सोलह पण्डितके नाम हैं ॥ १११ ॥

पारिषद्यो बुधः सभ्यः, सदस्यःसत्सभोचितः ।

आस्थानाधिपती राजा, राजसूयो नृपक्रतुः ॥११२॥

भाषार्थ—पारिषद्य, बुध, सभ्य, सदस्य, सदुचित, सभोचित (पु०) ये छह, सभासदके नाम है आस्थानाधिपति, और राजन् (मु०) ये राजाके नाम है इनके आगे 'सूय' शब्द जोड़ देने से राजसूय आदि (पु०) नृपकृतु (राजयज्ञ) के नाम बन जाते है ॥ ११२ ॥

विष्टरं मल्लिकां पीठ-मासन्दीमासनं विदुः ।
विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्थ पतिर्जिनः ॥ ११३ ॥
सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्रभृत् ।
तीर्थकरस्तीर्थकरस्तीर्थकृद्दिव्यवाक्पतिः ॥ ११४ ॥

भाषार्थ—विष्टर (पु०) मल्लिका (स्त्री) पीठ (न०) आसन्दी (स्त्री) आसन (न०) ये पाच, आसनके नाम हैं विष्टप, भुवन (न०) लोक (पु०) जगत् (न०) ये चार, संसारके नाम है इनके आगे 'पति' शब्द जोड़ देनेसे विष्टप पति आदि तथा जिन सर्वज्ञ, वीतराग अर्हन्, केवलिन्, धर्मचक्र-भृत्, तीर्थकर, तीर्थकर, तीर्थकृत्, दिव्यवाक्पति (पु०) ये सब जिनन्द्र भगवान् के नाम है ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

वर्षीयान्वृषभो ज्यायान्, पुरुषाद्यः प्रजापतिः ।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा, गौतमो नाभिजोऽग्रजः ११५

भाषार्थ—वर्षीयस् वृषभे, ज्यायस्, पुरुषाद्य, प्रजापति, ऐक्ष्वाकु काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम, नाभिज, अग्रज (पु०) ये सब आदिनाथ के नाम है ॥ ११५ ॥

सन्मतिर्महतिर्वीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ।

नाथान्वयो वर्द्धमानो, यत्तीर्थमिह सांप्रतम् ॥११६॥

भाषार्थ—सन्मति, महति, वीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, नाथान्वय, वर्द्धमान (पु०) ये वर्द्धमान (अन्तिम तीर्थकर) के नाम है इस वक्त भरत क्षेत्र में उन्हीं का बताया हुआ धर्म चल रहा है ॥ ११६ ॥

चेलं निवसनं वासश्चीरमम्बरमंशुकम् ।

वस्त्राद्यन्तदिगाद्यादि-संज्ञितो वृषभेश्वरः ॥११७॥

भाषार्थ—चेल, निवसन, वासस्, चीर, अम्बर, और अंशुक (न०) ये छह, वस्त्र के नाम है दिशा के नाम के आगे चेल आदि वस्त्रोंके नामोंके जोड़ देनेसे दिगम्बर आदि, वृषभेश्वर अर्थात् धर्मके ईश्वर (दिगम्बर मुनि) के नाम बन जाते है ॥११७॥

कुंकुमं रुधिरं रक्तं, कस्तूरी मृगनाभिजा ।

कर्पूरं धनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ॥११८॥

भाषार्थ—कुंकुम, रुधिर और रक्त (न०) ये तीन, केसरके नाम है कस्तूरी मृगनाभिजा (स्त्री) ये दो, कस्तूरीके नाम हैं कपूर (दो) धनसार हिम (पु०) ये तीन कर्पूरके नाम हैं इन चीजों को पूर्यात्मा भोगते है ॥ ११८ ॥

समालम्भोऽङ्गरागश्च, प्रसाधनविलेपनम् ।

श्लुषणाभरणं रुच्यं, माल्यं माला गुणि स्रजम् ॥११९॥

भाषार्थ—समालम्भ, अंगराज, (पु०) प्रसाधन, विलेपन (न०) ये चार लेपन के नाम है

भूषण, आभरण, -रुच्य (न०) ये तीन गहनेके नाम है ।
मात्य (न०) माला, गुण्णि, सृज् (स्त्री) ये मालाके नाम है ॥११६॥

मेखला रसना काञ्ची, हेमपर्यायसूत्रकम् ।

श्रोणीविम्बे कटीसूत्रं, मानसूत्रमिवाहितम् ॥१२०॥

भाषार्थ—मेखला, रसना, काञ्ची (स्त्री) तथा सुवर्ण के नामों के आगे 'सूत्र' शब्दको जोड़ देनेसे सुवर्णसूत्र, हेमसूत्र आदि (न०) भी कटीसूत्र अर्थात् करधौनीके नाम हो जाते है वह करधौनी कटीभाग में ऐसी शोभती है मानो उसके नापने का सूत्र ही है ॥ १२० ॥

मदिरां मद्यमैरेयं, सीधुं कादम्बरीमिराम् ।

प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधुवारां सुरां विदुः ॥१२१॥

भाषार्थ—मदिरा (स्त्री) मद्य, मैरेय (न०) सीधु, कादम्बरी, इरा, प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधुवारा, सुरा, (स्त्री) ये सब मदिरा (शराब) के नाम है ॥ १२१ ॥

शुण्डासवस्तद्विधायी, शौण्डो मद्येत मद्यपः ।

शक्तोऽक्षद्यूतपानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥१२२॥

भाषार्थ—शुण्डा (स्त्री) यह एक प्रकारकी मदिराका नाम है इसके पीनेवाले और बनानेवाले को शौण्ड कहते है तथा जो पांसोंसे खेलने में, जुवामें, मद्य पीने में आसक्त हो उसे मद्यप कहते है यद्यपि मद्य पीनेवाले को ही मद्यप कहना चाहिए जुवारी को नहीं; परन्तु शब्दोंके प्रयोगकी परिपाटी विचित्र ही है इस लिए उसको भी मद्यप कहते है ॥ १२२ ॥

सर्पिर्हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीरामृतं पयः ।

उदश्विन्मथितं तक्रं, कालशेयं पिबेद् गुरुः ॥ १२३ ॥

भाषार्थ—सर्पिष्, हैयङ्गवीन, आज्य (न०) ये तीन घी के नाम हैं दुग्ध, क्षीर, अमृत, पयस् (न०) ये दूध के नाम हैं तथा उदश्वित्, मथित, तक्र, कालशेय (न०) ये चार छाछ (मठे) के नाम हैं इसको बलिष्ठ पुरुष पीवें ॥ १२३ ॥

प्रायोवयोदशाऽग्नेहः—पूर्णं यौवनिकं विदुः ।

तारुण्यं यौवनं चान्त्यो, वार्द्धीनः स्थविरोमतः ॥ १२४ ॥

भाषार्थ—प्रायस्, वयस् (न०) दशा (स्त्री) अग्नेहस् (पु०) ये चार अवस्था (हालत) के नाम हैं इनके आगे पूर्ण, शब्द जोड़ देने से प्रायःपूर्ण, वयःपूर्ण, दशापूर्ण, अग्नेहःपूर्ण (पु०) ये यौवनिक अर्थात् जवान पुरुष के नाम बन जाते हैं । तारुण्य, यौवन (न०) ये दो जवानी के नाम हैं तथा अन्त्य, वार्द्धीन और स्थविर (पु०) ये बुढ़े के नाम हैं ॥ १२४ ॥

धंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्या-दाम्नायः सन्ततिः कुलं ।

ओघो वर्गश्च सन्तानः, काव्यमेव कवेः स्थितिः १२५

भाषार्थ—वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय, (पु०) सन्तति (स्त्री) कुल (न०) ओघ, वर्ग, सन्तान, (पु०) ये सब कुल के नाम हैं कवि लोगों का काव्य ही कुल है । भावार्थ—जिस तरह कुल से लोगों का नाम निशान रहता है उसी तरह कवि का नाम निशान उसकी कृति अर्थात् काव्य से रहता है इस लिए उसका वही कुल है ॥ १२५ ॥

हंसो मरालश्चकृङ्गो, हंसवाहः सनातनः ।
 मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा ॥१२६॥
 नीलकण्ठः कपाली च, शिखण्डी तत्पतिर्गुहः ।
 वरटा वारली हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ॥१२७॥

भाषार्थ—हंस, मराल, चक्रांग (पु०) ये तीन हंसके नाम हैं हंस के नामों के आगे 'वाह' शब्द जोड़ देने से सनातन अर्थात् ब्रह्माके नाम बन जाते हैं जैसे हंसवाह आदि । मयूर बर्हिण, केकिन्, शिखिन्, प्रावृषिक और नीलकण्ठ, कपालिन्, शिखण्डिन्, (पु.) ये सब मयूर के नाम हैं इनके आगे 'पति' शब्द जोड़ देने से कार्तिकेयके नाम बन जाते हैं जैसे मयूरपति आदि । वरटा, वारली, हंसी, (स्त्री) ये तीन हसनी के नाम हैं कोक, इहामृग, वृक (पु) ये तीन केक, पक्षीके नाम हैं ॥ १२६ ॥ १२७ ॥

हरिणो मृगः पृषतस्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
 पन्नगोऽहिर्विषधरो, लेलिहानो भुजङ्गमः ॥१२८॥
 नागोरगौ फणीसर्पस्तद्वैरी विनयात्मजः ।
 सुपर्णो गरुडस्ताक्षर्यो, गरुत्मान् शकुनीश्वरः ॥१२९॥
 इन्द्रजिन्मन्त्रपूतात्मा, वैनतेयो विषक्षयः ।
 खमिन्द्रियं दृषीकं च, श्रोतोऽच्चं करणं विदुः ॥१३०॥

भाषार्थ—हरिण, मृग, पृषत (पु.) ये हिरण के नाम हैं इन के आगे 'अंक', शब्द जोड़ देने से हरिणांक आदि और शर्वरी

कर अर्थात् रात्रि के नामों के आगे कर शब्द जोड़ देने से शर्वरी-
कर आदि भी चन्द्रमा के नाम हो जाते है और वे सब पुष्टिग होते
हैं । पन्नग, आर्हि, विषधर, लेलिहान, भुजंगम, नाग उरग, फणिन्,
सर्प, (पु) ये सब सर्प के नाम हैं इनके आगे वैरिन्, शब्द
जोड़ देने से पन्नगवैरिन् आदि और सुपर्ण, गरुड, ताक्ष्य गुरुत्मन्,
शकुनीश्वर, इन्द्रजित्, मन्त्रपूतात्मन्, वैनतेय, विषक्षय ये सब
विन्तात्मज अर्थात् गरुड के नाम है और वे सब पुष्टिग होते है ।
ख, इन्द्रिय, हृषीक, श्रोतस्, अक्ष, करण (न०) ये सब इन्द्रिय
के नाम है ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥

पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम् ।
अधमंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्बिषम् ॥ १३१ ॥
वृजिनं कलिलं एनो, दुःकृतं तज्जयी जिनः ।
सदनं सद्मं भवनं, धिष्ण्यं वेश्माथ, मन्दिरं ॥ १३२ ॥
गेहं निकेतनागारं, निशान्तं निर्वृतं गृहं ।
वसत्यवसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ॥ १३३ ॥
निकायं निलयं वस्त्यं, शरणं विदुरालयम् ।
खेयं खार्तं च परिखा, वप्रं स्याद् धूलिकुट्टिमम् ॥ १३४ ॥

भाषार्थ—पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय, सत्कृत (न०) ये
सब पुण्य के नाम हैं अध, अंहस्, दुरित (न०) पाप्मन् (पु.)
पाप, किल्बिष, वृजिन, कलिल, एनस्, दुःकृत (न०) ये सब पाप
के नाम हैं इनको जीतने वाले को जिन कहते हैं भावार्थ—इन पाप

के नामों के आगे 'ज्यैन्' शब्द जोड़ देने से जिन (जिनेन्द्र) के नाम हो जाते हैं ये सब पुंल्लिंग होते हैं ।

सदन, सशन्, भवन, धिष्य, वेश्मन्, मन्दिर, गेह, निकेतन, आगार, निशान्त, निवृत, गृह (न०), वसति, अवसथ, आवास (पुं०), स्थान, धामन्, आस्पद, पद (न०), निकाय, निलय (पु०), वस्त्य, शरण (न०) ये सब आलय (घर) के नाम हैं । खेत, खात (न०), परिखा (स्त्री०) ये तीन खाई के नाम हैं । वप्र और धूलिकुट्टिम (न०) ये दो, खाई पर जो मिटी का कूट होता है उसके नाम हैं ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः ।

प्रासादसौधहर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम् ॥ १३५ ॥

भाषार्थ—प्राकार (पुं०), परिधि (स्त्री), साल- (पु०) ये तीन कोट के नाम हैं । गोपुर अर्थात् नगर के दरवाजे के आकार को जिसमें से लोग आते जाते हैं, प्रतोली कहते हैं । प्रासाद (पु०), सौध (पुं० न०), हर्म्य (न०) ये तीन महलके नाम हैं । भावार्थ—धनाढ्यों के महल को हर्म्य, देवताओं के स्थान को प्रासाद और राजा के भवन को सौध कहते हैं । निर्व्यूह- (पु०) यद्दखुंटी का नाम है, मत्तवारण (न०) छज्जे के नीचे के टन्डों को कहते हैं ॥ १३५ ॥

वातायन मनालम्ब्य—मालम्ब्यं मुखमासनम् ।

समः सवर्णः सजातिः, सदृजः सदृशः सदृक् ॥ १३६ ॥

तुल्यः सधर्मः सरूप—स्तुला कञ्चोपमाभिधा ।

विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननः॥१३७
 सिंहनादीति पर्याय-मुपमानेषु योजयेत् ।
 व्यपदेशं निभं व्याजं, पदं व्यतिकरं छलं ॥१३८॥

भाषार्थ—वातायन, अनालम्ब, आलम्ब्य, मुखासन (न०)

ये ऋरोखे के नाम है । सम, सवर्ण, सजाति, सदृत्त, सदृश, सदृश,
 तुल्य, सधर्म, सरूप (पुं०) ये सब समान (बराबर) के नाम हैं ।
 तुला कक्षा, उपमा (स्त्री) ये तीन उपमा के नाम हैं । विन्मन्य,
 विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन, सिंहनादिन् (पुं०) इत्यादि पर्याय
 शब्दों को उपमानमें लगाना चाहिए । भावार्थ—ये शब्द उपमान
 के द्योतक हैं । व्यपदेश, निभ, व्याज पद, व्यतिकर, छल
 (न०) ये सब छल के नाम हैं ॥१३६॥१३७॥१३८॥

छद्म वृत्तान्तमुत्प्रेक्षा, शब्दमन्यं च निर्णयेत् ।

व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्तति ब्रजः॥१३९

व्यूहो निकायो निकरो, विकुरम्भं कदम्बकं ।

ओघः समुदयः संघः, संघातः समितिस्ततिः ॥१४०

निचयः प्रकरः पंक्तिः, पशूनां समजो ब्रजः ।

भाषार्थ—छद्मन्, वृत्तान्त, (न०) ये उत्प्रेक्षा के नाम हैं,

इसी तरह के और भी शब्द जान लेना चाहिए । व्रात, पूग, स-
 मान, समूह, सन्तति, ब्रज. व्यूह, निकाय, निकर, (पुं०), निकु-
 रम्भ, कदम्बक, (न० पुं०) ओघ, समुदय, संघ, संघात (पुं०)
 समिति, तति (स्त्री) निचय, प्रकर (पुं०,) पंक्ति (स्त्री) ये

सब समूह के नाम हैं । पशुओं के समुदाय को ब्रज (पुं०) कहते हैं ॥१३६॥१४०॥

समीपाभ्यासमासन्न-मभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ॥१४१
अविदूरं च निकट-मविलम्बमनन्तरम् ।

भाषार्थ—समीप, अभ्यास, आसन्न, अभ्यर्ण (न०) सन्निधि (स्त्री) अविदूर, निकट, अविलम्ब, अनन्तर (न०) ये सब सन्निधि अर्थात् निकट (पास) के नाम हैं ॥१४१॥

जित्या हलि हलः सीरं, लाङ्गलं तत्करोबलः ॥१४२
रेवतीदयितो नील-वसनः केशवाग्रजः ।

भाषार्थ—जित्या, हलि (स्त्री) हल (पुं०) सीर, लाङ्गल (न०) ये सब हल के नाम हैं, इनके आगे कर शब्द जोड़ देने से जित्याकर आदि और बल, रेवतीदयित, नीलवसन, केशवाग्रज (पुं०) ये सब किसान (खेतहड़) के नाम हैं ॥१४२॥

अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः, श्वेतवाजी कपिध्वजः १४३
गाण्डीवी कार्मुकी सव्य-साची मध्यमपाण्डवः ।
वृषसेनः सुनिर्मोको, दैत्यारिः शक्रनन्दन ॥ १४४ ॥
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जयः ।

भाषार्थ—अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, गाण्डीविन्, कार्मुकिन्, सव्यसाचिन्, मध्यमपाण्डव, वृषसेन, सुनिर्मोक, दैत्यारि, शक्रनन्दन, कर्णशूलिन्, किरीटिन्, शब्दभेदिन्, धनञ्जय (पुं०) ये सब अर्जुन के नाम हैं ॥१४३॥१४४॥

समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्युरन्तकः ॥ १४५ ॥

धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनु परेतराद् ।

यमुनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ॥ १४६ ॥

भाषार्थ—समवर्तिन्, यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु, परेतराज्, यमुन, यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव, और दण्डभृत् (पु०) ये सब काल के नाम है ॥ १४५ ॥ १४६ ॥

कुरुकीचकयोः शत्रु-र्वायुपुत्रो वृकोदरः ।

धर्मात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेर्यो भरतान्वयः ॥ १४७ ॥

कौरव्यो राजलक्ष्मा च, सोमवंश्यो युधिष्ठिरः ।

भाषार्थ—कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुपुत्र और वृकोदर (पु०) ये चार भीमके नाम है । धर्मात्मज, अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय, कौरव्य, राजलक्ष्मन्, सोमवंश्य और युधिष्ठिर (पु०) ये सब युधिष्ठिर के नाम है ॥ १४७ ॥

कृष्णं नीलासितं कालं, धूमं धूम्रमलिप्रभं ॥ १४८ ॥

भाषार्थ—कृष्ण, नील, असित, काल, धूम, धूम्र, और अलिप्रभ, ये सात काले रंग के नाम है ये तीनों लिङ्गों में देखे जाते हैं ॥ १४८ ॥

तप्तोन्धकारतिमिरं, ध्वान्तं संतमसं तमम् ।

श्वेतार्जुनौ शुचिः श्वेतो, वल्लं सितपाण्डुरम् ॥ १४९ ॥

शुक्लावदातं धवलं, पाण्डु शुभ्रं शशिप्रभम् ।

लोहितं रक्तमातामं, पाटलं विशदारुणम् ॥ १५० ॥

भाषार्थ—तमस (न०) अन्धकार (पु० न०) तिमिर ध्वान्त, संतमस, तम (न०) ये सब अन्धेरे के नाम हैं । श्वेत, अर्जुन (पु०) शुचि (स्त्री) श्वेत (पु०) बल्लभ, सित, पारङ्गुर, शुक्ल, अवदात, धवल, (पु० न०) पाण्डु, (पु०) शुभ्र, शशिप्रभ (न०) ये सब सफेद के नाम हैं और प्रायः ये सब तीनों लिंगों में देखे जाते हैं तथा लोहित, रक्त, आतामू (तीन) ये तीन लाल के नाम हैं कुछ कम लाल वर्ण को पाटल (तीन) कहते हैं ॥ १४६ ॥ १५० ॥

गौरं पीतं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।
हरिणी लोहिनी शोणी, गौरी श्वेनी पिशङ्गी १५१
शारङ्गी शबली काली, कल्माषी नीलपिङ्गली ।
परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दं च कौसुमम् ॥ १५२ ॥

भाषार्थ—गौर, पीत, हरिद्राभ (तीन) ये तीन पीले के नाम हैं । पालाश, हरित् (तीन) ये तीन हरे के नाम हैं । हरिणी, लोहिनी, शोणी, गौरी, श्वेनी, पिशङ्गी, सारङ्गी, शबली, काली, कल्माषी, नीलपिङ्गली, (स्त्री) ये सब स्त्रीलिंग शब्द रंग के वाचक हैं परन्तु ध्यान रहें कि इनका प्रयोग, स्त्रीलिंग में ही होगा । पराग, मधु, किञ्जल्क मकरन्द, कौसुम (न०) ये पराग के नाम हैं ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

उचाराद्रजः पांसुं, रेणुं धूलीं च योजयेत् ।
कलङ्कावयमलिनं, किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम् १५३
निर्वाधमधमं पङ्कं, मलीमसमपि त्यजेत् ।

भाषार्थ—तथा उपचार से पुष्प के नामों के 'आगे रजस् (न०) पासु, रेणु, (पु०) धूली (स्त्री) इन धूली के नामों को जोड़ देनेसे पुष्परजस् आदि भी पराग के नाम बन जाते हैं कलङ्क (पु०) अत्रद्य, मलिन, (न०) किञ्जल्क (पुं०) लक्ष्मन्, लाञ्छन, निर्वाध, अधम (न०) पङ्क, मलीमस (पु० न०) ये सब कलंक के नाम है वह कलंक सर्वथा त्याज्य है ॥ १५३ ॥

जनोदाहरणं कीर्ति, साधुवादं यशो विदुः ॥ १५४ ॥
वर्णं गुणावलिं ख्याति-मवदानं तु साहसम् ।

भाषार्थ—जनोदाहरण (न०) कीर्ति (स्त्री) साधुवाद (पु०) यशस्, वर्ण (न०) गुणावलि, ख्याति (स्त्री) अवदान, साहस (न०) ये सब कीर्ति के नाम हैं ॥ १५४ ॥

प्रेष्यादेशप्रदेशाज्ञा-नियोगाः शासनं तथा ॥ १५५ ॥
संदेशः प्रिययो वार्ता, प्रवृत्तिः किंवदन्त्यपि ।
कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कशं परुषं दृढम् ॥ १५६ ॥

भाषार्थ—प्रेष्य, आदेश, निदेश, आज्ञा, नियोग (पु०) शासन (न०) ये आज्ञा के नाम है । प्यारों के समाचार को संदेश (पु०) कहते हैं प्रवृत्ति और किंवदन्ती (स्त्री) ये दो लोगों की अफवाह के नाम है । कठोर कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष, दृढ (तीन) ये सब कठोर (कडे) के नाम हैं ॥ १५५ ॥
॥ १५६ ॥

अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलं ।
प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं, नवं नूतनमग्रिमम् ॥ १५७ ॥

भाषार्थ—अश्लील, काहल, फरगु, (न०) ये तीन व्यर्थ के नाम है । कोमल, मृदु, पेशल (न०) ये कोमल के नाम हैं । प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य, नव, नूतन, अग्रिम (न०) ये सब नवीन के नाम हैं ॥ १५७ ॥

पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।

भो रे हंहो हे चामन्त्रे, कञ्चित्किञ्चिन संशये ॥ १५८ ॥

भाषार्थ—पुराण जरठ, जीर्ण, प्राक्तन, सुचिरन्तन (न०) ये सब पुराने (जीर्ण) के नाम है । भो, रे, हंहो, हे (अ०) ये सब शब्द आमन्त्रण अर्थात् किसी को बुलाने में आते है और कञ्चित्, किञ्चिन (अ०) ये दो सशय अर्थ में आते हैं ॥ १५८ ॥

**द्राक् क्षणोऽहाय सपदि, निषेधे मा न खल्वयम् ।
उच्चैरुच्चावचं तुङ्ग-मुच्चमुन्नतमुद्धितम् ॥ १५९ ॥**

भाषार्थ—द्राक्, क्षणे, अहाय, सपदि, (अ०) ये चा तत्काल के नाम हैं । मा, न, खलु (अ०) ये निषेध करने में आते है, उच्चैस्, (अ०) उच्चावच, तुंग, उच्च, उन्नत, उद्धित (न०) ये सब ऊचे के नाम है ॥ १५९ ॥

नीचं न्यगातनं कुब्जं, नीचैर्ह्रस्वं नयेत् परं ।

अमा सह समं साकं, साद्धं सत्रा सजूः समाः ॥ १६० ॥

भाषार्थ—नीचं, न्यगातन, कुब्ज (पु०) नीचैस् (अ०) ह्रस्व (पु०) ये सब नीचे के नाम है । अमा, सम, साक, साद्धं सत्रा (अ०) सजूष (न०) ये सब साथ के नाम हैं ॥ १६० ॥

सर्वदा सततं नित्यं, शश्वदात्यन्तिकं सदा ।

शृङ्गा दृतिहरि नाथ—हरिस्तिर्यञ्चशृगिणः ॥१६१॥

भाषार्थ—सर्वदा, सततं नित्यं, शश्वत्, आत्यन्तिक, सदा (अ०) ये सदा (हमेशा) के नाम है । शृङ्गिन्, दृतिहरि, नाथ-हरि (पु०) ये तीन सींग वाले पशु के नाम है ॥ १६१ ॥

गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।

वियोगं सद्भावस्था—विरहं फुल्लकं विदुः ॥१६२॥

भाषार्थ—गौ, चतुष्पात्, पशु (पु०) ये तीन पशुक नाम है उनमें भी भैस को महिषी और देहिका (स्त्री) कहते हैं काम की अवस्था के विरह को वियोग और फुल्लक (पु०) कहते हैं ॥ १६२ ॥

प्रेमाभिलाषमालम्बं, रागं स्नेहमंतः परं ।

संहितं सहितं युक्तं, संपृक्तं संभृतं युतम् ॥१६३॥

संस्कृत समवेतं च, प्राहुरन्वीतमन्वितम् ।

वर्तर्माध्वा सरणिः पन्थाः, धार्गः प्रचरसंचरौ ॥१६४॥

भाषार्थ—प्रेमन् (न०) अभिलाष, आलम्ब, राग, स्नेह (पु०) ये सब राग के नाम है इनके बाद, सहित, सहित, युक्त संपृक्त, संभृत, युत, संस्कृत, समवेत अन्वीत, अन्वित (तीन) ये सब सहित के नाम हैं । वर्तर्म् (न०) अध्वन् सरणि, पथिन्, मार्ग, प्रचर, संचर (पु०) ये मार्ग के नाम हैं ॥१६३॥१६४॥

त्रिधार्गनाभगा गङ्गा, घोषो गोमण्डलं व्रजः ।

कृती नदीष्णो निष्णातः, कुशली निपुणः पटुः ॥ १६५
 चुण्णः प्रवाणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः ।
 विदग्धश्चतुरो धूर्त-श्चाटुकृत्कितवः शठः ॥ १६६ ॥

भाषार्थ—इन मार्ग के नामों के पीछे 'त्रि, शब्द और 'आगे'
 गा, शब्द जोड़ देने से त्रिमार्गगा (स्त्री) आदि गंगा के नाम बन
 जाते हैं । घोष, (पु०) गोमण्डल (न०) ब्रज (पु०) ये तीन
 गौ के घेरे के नाम हैं । कृतिन्, नदीष्ण, निष्णात, कुशलिन्,
 निपुण, पटु, चुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध,
 चतुर (पु०) ये चतुर के नाम हैं । धूर्त, चाटुकृत्, कितव, शठ,
 (पु०) ये धूर्त के नाम हैं ॥ १६५ ॥ १६६ ॥

क्वपि नागरिको ज्ञेयो, गोत्रं संज्ञाङ्गनाम तत् ।
 मुग्धो मूढो जडो नेडो, मूको मूर्खश्च कद्वदः ॥ १६७ ॥
 स देवानांप्रियोऽप्राज्ञो, मन्दो धीनामवर्जितः ।
 षाष्टिकः कलमः शालि-ब्रीहिः स्तम्बकरिस्तथा १६८

भाषार्थ—कहाँ २ नागरिक को भी धूर्त कहते हैं । गोत्र
 (न०) संज्ञा (स्त्री) अंक, नाम (न०) ये नाम के नाम हैं ।
 मुग्ध, मूढ, जड, नेड, मूक, मूर्ख, कद्वद, देवानाप्रिय, अप्राज्ञ, मन्द
 और बुद्धि के नामों के आगे 'वर्जित, शब्द जोड़ देने से धीवर्जित
 आदि (पु०) ये सब मूर्ख के नाम हैं । षाष्टिक, कलम, शालि,
 ब्रीहि, स्तम्बकरि (पु०) ये शालि (धान) के नाम हैं ॥ १६७ ॥
 १६८ ॥

वत्सः शकृत्करिर्जातः, षोडः षड्दशनः स्मृतः ।
 शौण्डीरो गर्वितः स्तब्धो, मानी चाहंकृदुद्धतः १६६
 उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।
 चौरैकागारिकस्तेना-स्तस्करः प्रतिरोधकः ॥१७०॥

भाषार्थ—वत्स, शकृत्करि, जात (पुं०) ये तीन बछड़े के नाम हैं । षोड, षड्दशन, (पुं०) ये दो छह दांत वाले बछड़े के नाम हैं । शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध, मनिर्न, अहंकृत्, उद्धत, उद्ग्रीव, उद्धर, दृप्त (पुं०) ये सब अहंकारी के नाम हैं । नीच, पिशुन, अधम (पुं०) ये नीच के नाम हैं । चौर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक तथा—

निशाचरो गूढचरो, हारकः पारिपान्थिकः ।
 प्रस्तरोत्पलपाषाण-दृषद्धानुशिलाधनाः ॥१७१॥

भाषार्थ—निशाचर, गूढचर, हारक, पारिपान्थिक (पुं०) ये सब चोर के नाम हैं । प्रस्तर, उपल, पाषाण, दृषत्, धातु (पुं०) शिला (स्त्री) धन (पुं०) ये सब पत्थर के नाम हैं ॥१७१॥

तत्र जातमयो लोहं, शातकुम्भं नयेत् परं ।
 साधीघोऽत्यर्थमत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशं ॥१७२॥

भाषार्थ—पत्थर के नामों के आगे 'जात' शब्द जोड़ देने से उपलजात आदि (पुं०) अयस् (न०) लोह (पुं०) ये सब लोह के नाम हैं । तथा उत्पल आदि के आगे 'जात' शब्द जोड़ देने से सुवर्ण के भी नाम बन जाते हैं जैसे उपलजात आदि ।

साधीयसु (न०) अत्यर्थ, अत्यन्त, नितान्त, सुष्ठु, भृशम्
(अ०) ये सब बहुत के नाम है ॥ १७२ ॥

स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलं ।
चित्राश्चर्याद्भुतं चोद्यं, विस्मयः कौतुकोऽप्यहो १७३

भाषार्थ—स्फुट, साधु, खलु, (अ०) स्पष्ट, विशद, पु-
ष्कल, अमल, (न०) ये सब स्पष्ट के नाम हैं । चित्र (न०)
आश्चर्य (पुं०) अद्भुत चोद्य, (न०) विस्मय, कौतुक (पुं०)
अहो (अ०) ये सब आश्चर्य के नाम है ॥ १७३ ॥

अभियोगोद्यमोद्योगा, उत्साहो विक्रमो मतः ।
क्षामं चान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं पुरातनम् ॥१७४
शीर्णावसानं न्यूनं च, धैर्यं शौर्यञ्च पौरुषं ।
रहोऽनुरहसोऽपांशु, रहस्यं च भिन्नन्ति कः ॥१७५

भाषार्थ—अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह, विक्रम (पुं०)
ये सब उत्साह के नाम है । क्षाम, चान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण,
पुरातन, शीर्ण, अवसान, न्यून (न०) ये सब दुबले (दुर्बल) के
नाम है । धैर्य, शौर्य, पौरुष, (न०) ये सब धीरज के नाम हैं ।
रहस (अ०) अनुरहस (न०) उपांशु (अ०) रहस्य (तीन)
ये छिपे हुए अर्थात् गुप्त कार्य के नाम है । सज्जन लोग किसी की
गुप्त बात को पुगट नहीं करते हैं ॥ १७४ ॥ १७५ ॥

कीनाशः कृपणो लुब्धो, गृध्रो दानोऽभिलाषकः ॥
क्षिप्राशुमंस्वरं शीघ्रं, सहसा भटिति द्रुतम् ॥१७६

तूर्णं जवः स्यदो रंहो , रयो वेगस्तरो लघुः ।

भाषार्थ—कीनाश, कृपण, लुब्ध, गृध्र, दीन, अभिलाषुक (पु०) ये सब कृपण (कज्स) पुरुष के नाम है । क्षिप्र, आशु मंचु, अरं, शीघ्र, सहसा, भटिति, द्रुत, तूर्ण (अ०) जव, स्यद (पु०) रहस, (अ०) वेग, तर, लघु (पु०) ये सब शीघ्र (जल्दी) के नाम हैं ॥ १७६ ॥

प्राध्वंकृतः सितो बद्धः, सन्धानीतो नियन्त्रितः १७७
नियमितः शृङ्खलितः, पिनद्धः पाशितो रिपुः ।

भाषार्थ—प्राध्वकृत, सित, बद्ध, सन्धानीत, नियन्त्रित नियमित, शृङ्खलित, पिनद्ध, पाशित (पु०) ये सब पाश से बांधे हुए शत्रु के नाम हैं ॥ १७७ ॥

कान्तं कमनं कमं च, कमनीयं मनोहरं ॥ १७८ ॥
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।

चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्यवन्धुरम् ॥ १७९ ॥
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपपार्यहारि च ।

भाषार्थ—कान्त, कमन, कम, कमनीय, मनोहर, अभिराम रमणीय, रम्य, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, वन्धुर, दर्शनीय, मनोज्ञ और चित्त के पर्याय वाची शब्दों के आगे ' हारि' शब्द जोड़ देने से चित्तहारि आदि (न०) ये सब सुन्दर के नाम हैं ॥ १७८ ॥ १७९ ॥

भवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिनं हिमम् ॥१८०॥

नीहारं तत्करं विद्धि, मृङ्गाकं रोहिणीपतिम् ।

चारोऽवसर्पः प्रणिधि-निगूढपुरुषश्चरः ॥१८१॥

भाषार्थ—अवश्याय, तुषार (पु० न०) प्रालेय, तुहिन, हिम (न०) नीहार, (पु० न०) ये सब वर्ष के नाम है इनके आगे 'कर' शब्द जोड़ देने से अवश्यायकर आदि तथा मृङ्गाक रोहिणीपति (पु०) ये सब चन्द्रमा के नाम है चार, अवसर्प, प्रणिधि, निगूढ-पुरुष, चर (पु०) ये सब गुप्तचर के नाम है ॥ १८० ॥ १८१ ॥

तद्दानुक्तः सहस्राक्षः, सत्यार्थं ऋतसूनृते ।

अत्यन्ताय चिरायेति, प्राग्हेऽकस्माद् बलादिति १८२

• भाषार्थ—इन गुप्त चर के नामों के आगे 'मतुप्' प्रत्यय लगा देने से सहस्राक्ष अर्थात् इन्द्र के नाम बन जाते हैं वे पुलिंग होते हैं ऋतः सूनृत (न०) ये दो सत्य के नाम है अत्यन्ताय (अ०) बहुत का, चिराय (अ०) बहुत काल का, प्राग्हे (अ०) प्रातः कालीन दिवस का अकस्मात् (अ०) यह अचानक का और बलात् (अ०) यह जबरदस्ती का नाम है ॥ १८२ ॥

प्रायेणेति कृतिश्चेति, विभक्तिप्रतिरूपकम् ।

रम्भा स्त्री कदली चिह्नं, मोचासारतरुश्च सा १८३

भाषार्थ—प्रायेण, (बाहुष्य) और कृतिः ये दोनों अव्यय हैं परन्तु विभक्ति कैसे रूप मालूम होते हैं इस लिये इन्हें विभक्ति प्रतिरूपक अव्यय कहते हैं रम्भा (स्त्री०) स्त्री और कदली को,

कदली (स्त्री०) चिन्ह (ध्वजा) और मोचा को तथा मोचा (स्त्री०), सारतरु (शास्मलि) और कदली को कहते है ॥ १८३ ॥

कीचकोध्वनिमद्रेणु-स्तालो गेयक्रमोद्भवः ।

पुष्करं मुरजं पद्मं, हस्तिहस्ताग्रनामकं ॥ १८४ ॥

← भाषार्थ—बजने वाले वाश को कीचक (पु.) कहते है ।

गाने की आवाज के क्रम से (चढ़ा उतार से) जो शब्द उत्पन्न होता है उसे ताल (पु०) कहते है, पुष्कर (न०) यह मृदंग, कमल, और हाथी की सूड़ के आगे की अगुलि का नाम है ॥ १८४ ॥

निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम् ।

दीर्घं प्रांशु विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथु ॥ १८५ ॥

भाषार्थ—निस्तल, वर्तुल, वृत्त (न०) ये गोल के नाम हैं ऊँचे नीचे विषम स्थल को स्थपुट (न०) कहते हैं दीर्घ, प्रांशु, विशाल (न०) ये लम्बे के नाम है । बहुल, पृथुल, पृथु (न०) ये तीन मोटे के नाम हैं ॥ १८५ ॥

उल्क्षणं दारुणं तिग्मं, घोरं तीव्रोग्रमुत्कटम् ।

शीतकं, तिमिरं याप्यं, मन्दं विद्धि विलम्बितम् ॥ १८६ ॥

भाषार्थ—उल्क्षण, दारुण, तिग्म, घोर, तीव्र, उग्र, उत्कट, (न०) ये सब तेज के नाम हैं । शीतक, तिमिर याप्य, मन्द, विलम्बित, (पु० न०) ये सब देर के नाम हैं ॥ १८६ ॥

सौहार्दं सौहृदं हृद्यं, सौहृद्यं सख्यसौरभम् ।

मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं, साहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥ १८७ ॥

भाषार्थ—सौहार्द, सौहृद, हृद्य, सौहृद्य, सख्य, सौरभ
(न०) मैत्री (स्त्री) मैत्रैयिक, अजर्य, साहाय्य, सगत (न०)
ये सब मित्रता के नाम हैं ॥ १८७ ॥

स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विसृसा निजः ।
योग्यो गुणनिकाभ्यासः, स्याद्भीक्षणं मुहुर्मुहुः ॥ १८८ ॥

भाषार्थ—स्वभाव (पु०) प्रकृति (स्त्री०) शील (न०)
निसर्ग (पुं०) विसृसा (अ०) निज (पुं०) ये सब स्वभाव के
नाम हैं । योग्य (पुं०) लायक को कहते हैं गुणनिका (स्त्री)
अभ्यास (पुं०) ये दो अभ्यास के नाम है अभीक्षण, मुहुर्मुहु (अ०)
ये बारबार के नाम हैं ॥ १८८ ॥

मृषालीकं मुधा मोघं, वितथं विफलं वृथा ।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहनमुद्धरेत् ॥ १८९ ॥

भाषार्थ—मृषा (अ०) अलीक (न०) मुधा (अ०)
मोघ, वितथ, विफल (न०) वृथा (अ०) ये सब फल के नाम
हैं विधुर, व्यसन, कष्ट, कृच्छ्र, गहन (पुं० न०) ये सब दुःख के
नाम हैं । दुःख त्याज्य है ॥ १८९ ॥

समस्तं सकलं सर्वं, कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम् ।
शकलं विकलं खण्डं, शल्कं लेशं त्वं विदुः ॥ १९० ॥

भाषार्थ—समस्त, सकल, सर्व, कृत्स्न, विश्व, अखिल (न०)
ये सब सम्पूर्ण के नाम हैं । शकल, विकल, खण्ड, शल्क, लेश, त्व
(न०) ये सब टुकड़े के नाम हैं ॥ १९० ॥

मर्मकोशं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।

शोणितं लोहितं रक्तं, रुधिरं क्षतजामृजम् ॥१६१॥

भाषार्थ—मर्मकोश, कलह (पु०) ये दो लड़ाईके नाम हैं परिवाद (पु०) यह निन्दाका नाम है छल (न०) कपटको कहते हैं शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज, अमृज (न०) ये सब रक्त (लोहू) के नाम हैं ॥ १६१ ॥

सततानारताजसा—अन्वहं कन्यापति वरः

उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ॥ १६२ ॥

भाषार्थ—सतत, अनारत, अजस, अन्वह (अ०) ये चार हमेशाके नाम हैं कन्या के पति (दूलह) को वर (पु०) कहते हैं उद्वाह (पु०) परिणयन (न०) विवाह (पु०) निवेशन (न०) ये चार विवाह के नाम हैं ॥ १६२ ॥

शुषिरं विवरं रन्ध्रं, छिद्रं गर्त्तं च गह्वरं ।

श्वभ्रं रस्यं च पातालं, नरकं यान्त्यमेधसः ॥१६३॥

भाषार्थ—शुषिर, विवर, रन्ध्र, छिद्र, गर्त्त और गह्वर (न०) ये सब गड्ढे के नाम हैं । श्वभ्र, रस्य, पाताल, नरक (न०) ये चार नरक के नाम हैं इसमें अज्ञानी जीव पड़ते हैं ॥ १६३ ॥

अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, वहिष्ठं बहुलं बहु ।

प्रचुरं नैकमात्यन्त्यं, प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ॥१६४॥

भाषार्थ—अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, वहिष्ठ, बहुल, बहु, प्रचुर, नैक, आत्यन्त्य, प्रभूत, प्राज्य, पुष्कल (न०) ये सब बहुत के नाम हैं ॥ १६४ ॥

भावो भवश्च संसारः, संसरणं च संसृतिः ।

तत्त्वज्ञश्चतुरो धीरस्त्यजेज्जन्माजवं जवं ॥१९५॥

भाषार्थ—भाव, भव, संसार (पु०) संसरण (न०) संसृति (स्त्री) ये सब संसार के नाम हैं जो तत्त्वज्ञ अर्थात् वस्तु के स्वरूप के ज्ञाता है चतुर है तथा धीर है वे इस संसार को शीघ्र ही छोड़ देते हैं ॥१९५॥

ओजस्व्यूर्जस्वितेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि ।

भास्करो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः ॥१९६॥

भाषार्थ—ओजस्विन्, ऊर्जस्विन्, तेजस्विन्, तरस्विन्, मनस्विन् (पुं०) ये प्रतापी पुरुष के नाम हैं । भास्कर, भासुर, शूर, प्रवीर, सुभट (पु०) ये सब शूरवीर के नाम हैं ॥१९६॥

उररीकृतमप्यूरी-कृतमङ्गीकृतं तथा ।

अस्तुंकारोऽभ्युपगमे, सत्यकारः पणार्पणे ॥१९७॥

भाषार्थ—उररीकृत, ऊरीकृत, अगीकृत (न०) तथा अस्तुंकार (पुं०) ये स्त्रीकार के नाम हैं । बाजार में किसी चीज को निश्चित करने के लिए जो साईं देकर प्रतिज्ञा की जाती है उसे सत्यकार (पु०) कहते हैं ॥१९७॥

तनुत्रं वर्म कवच-मावृति र्वाणवारणम् ।

कूर्पासं कञ्चुकं छत्र-मातपत्रोष्णधारणम् ॥१९८॥

भाषार्थ—तनुत्र, वर्मन्, कवच (न०) आवृति (स्त्री) बाणधारण (न०) ये सब वस्त्र के नाम हैं । कूर्पास, कञ्चुक

(न०) य दो अंगरखे के नाम हैं । छत्र, आतपत्र, उष्णवारण

(न०) ये तीन छत्ते के नाम हैं ॥ १६८ ॥

केशं शिरोरुहं बालं, कचं चिकुरमीहयेत् ।

चूड़ापाशं च धम्मिल्लं, कवरी केशबन्धनम् ॥१६९॥

भाषार्थ—केश, शिरोरुह, बाल, कच, चिकुर (पु०)

ये सब बालों के नाम है । चूड़ापाश, धम्मिल्ल (पु०) कवरी (स्त्री)

केशबन्धन (न०) ये सब स्त्री के चोटी के नाम हैं ॥ १६९ ॥

क्षेमं कल्याणमभयं, श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् ।

भावकं भविकं भव्यं, कुशलं च शिवं तथा ॥२००॥

भाषार्थ—क्षेम, (पु०, न०) कल्याण, अभय, श्रेयस्,

भद्र, मंगल, भावुक, भविक, कुशल और शिव (तीन) ये सब

कल्याण के नाम है ॥ २०० ॥

वक्ता वाचस्पति र्यत्र, श्रोता शक्रस्तर्थापि तौ ।

शब्दपारायणस्यान्तं, न गतौ तत्र के वयम् ॥२०१॥

भाषार्थ—शब्द का समूह इतना भारी है कि वृहस्पति

कहने वाले और इन्द्र महाराज सुनने वाले हुए तौ भी वे पार न पा-

सके, फिर हम लोग कैसे पार पा सकते है ॥ २०१ ॥

तथापि किञ्चित्कस्मैचित्, प्रतिबोधाय सूचितं ।

बोधयेत्किञ्चिदुक्तिज्ञं, मार्गज्ञः सहयाति किम् ॥२०२॥

भाषार्थ—तौ भी किन्हीं लोगों को समझाने के लिये कुछ

शब्द कहे है—जो कि सूचना मात्र है । क्योंकि युक्ति को जानने

वाले लोगों को सूचना मात्र ही दी जाती है । सच भी है कि मार्ग को जानने वाला साथ नहीं जाता किन्तु दूर से रास्ता बता देता है कि तुम्हारा मार्ग अमुकी २ ओर से गया है ॥ २०३ ॥

प्रमाणमकलंकस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम् ।

द्विसन्धानकवेः काव्यं, रत्नत्रयमपश्चिमम् ॥ २०३ ॥

भाषार्थ—अकलंक भट्टका प्रमाण, पूज्यपाद स्वामी का लक्षण और द्विसन्धान काव्य के रचयिता कवि का उक्त काव्य ये तीनों अपूर्व ही रत्न है ।

भावार्थ—अकलंक देव ने जैसा प्रमाण का स्वरूप कहा है वैसा और किसी ने नहीं कहा तथा पूज्यपाद स्वामी ने जैसे वस्तुओं के लक्षण बनाए है वैसे लक्षण दूसरों ने नहीं बनाए और धनञ्जय कवि के बनाए हुए द्विसन्धान काव्य की तरह काव्य भी किसी ने नहीं बनाया, इस लिए हम लोगों के लिए ये तीन रत्न अपूर्व ही है क्योंकि पहले कभी सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक चारित्र इन तीनों के सिवा किसी का नाम रत्नत्रय नहीं सुना था ।

कवे धनञ्जस्येयं, सत्कवीनां शिरोमणोः ।

प्रमाणं नाम-मालेति, श्लोकानाञ्च शतद्वयम् ॥ २०४ ॥

भाषार्थ—बड़े २ कवियों में शिरोमणि धनञ्जय नाम के कवि की बनाई हुई यह नाम-माला, सर्व मान्य है इसके श्लोकोंकी संख्या २०० के प्रमाण है ॥ २०४ ॥

ब्रह्माणं समुपेत्य वेदनिन्दव्याजात्तुषाराचल-

स्थानस्थावरभीश्वरं सुरनदीव्याजात्तथा केशवं ।

अप्यभोनिधिशायिनं जलनिधि ध्वानापदेशाद्दहो
पूत्कुर्वन्ति धनञ्जयस्य च भिद्या शब्दाः समुत्पीडिताः

भाषार्थ—यह एक भारी आश्चर्य की बात है कि धनञ्जय कवि के भय से पीड़ित होकर शब्द, वेदध्वनि के बहाने से ब्रह्मा के पास, गंगा के शब्द के बहाने से महादेव के पास तथा समुद्र के शब्दों के मिस से विष्णु भगवान के पास जाकर पुकार करते हैं—अपना दुःख कहते हैं ॥

इति धीमदुधनञ्जयकविविरचित नाम-माला समाप्ता ।



॥ श्रीजिनाय नमः ॥

अथ अनेकार्थ नाम-माला ।

गम्भीरं रुचिरं चित्रं, विस्तीर्णार्थप्रकाशकं ।
शाब्दं मनाक् प्रवक्ष्यामि, कर्वानां हितकाम्यया ॥ १ ॥

भाषार्थ—मैं (धनञ्जय) कवियों के हितकी इच्छासे विशद अर्थ को बताने वाले, गम्भीर, मनोहर तथा विचित्र शब्दों के समूह को कहता हूँ ॥ १ ॥

अर्हात्पनाकिनौ शम्भू, जिनावर्हत्तथागतौ ।
वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ, विष्णुरुद्रौ वृषाकपी ॥ २ ॥

भाषार्थ—शम्भु शब्द, अर्हत् (जिन) और पिताकिन (महादेव) इन दोनों को कहने वाला है जिन शब्द, अर्हत् और तथागत (बुद्ध) का वाचक है विवस्वत् शब्द, वेद और सूर्य का वाची है वृषाकपि शब्द, विष्णु और रुद्र का वाचक है ये सब शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं ॥ २ ॥

वैकुण्ठाविन्द्रगोविन्दा-वनन्तौ शेषशार्ङ्गिणौ ।
जीमूतौ करिकुत्कीलौ, पर्जन्यौ शक्रवारिदौ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—वैकुण्ठ शब्द, इन्द्र और गोविन्द का, अनन्त, शब्द, शेष (सर्प विशेष) और शार्ङ्गिन् (महादेव) का, तथा जीमूत शब्द, करिकुत् (मेघ) और किल (कीली) का और पर्जन्य शब्द, शक्र और वारिद (मेघ) का वाचक है ये सब शब्द पुल्लिङ्ग हैं ॥ ३ ॥

वनमम्भसि कान्तारे, भुवनं विष्टपेऽर्णसि ।

घृतं सर्पिषि पानीये, विषं हालाहले जले ॥ ४ ॥

भाषार्थ—वन (न०) शब्द, अम्भस् (जल) और कान्तार (जगल) का, भुवन (न०) शब्द, विष्टप (ससार) और अर्णस (जल) का, घृत (न०) शब्द, सापष् (घी) और पानीय (जल) का तथा विष (न०) शब्द, हालाहल और जल का वाचक है ॥४॥

तल्पं दारेषु शय्यायां, ज्योतिश्चक्षुषि तारके ।

धवले सुन्दरे रामो, वामो वक्रे मनोहरे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—तल्प (न०) शब्द, दारा (स्त्री) और शय्या का, ज्योतिष् (न०) शब्द, चक्षुष् और तारक (तारा) का, राम (पु०) शब्द, धवल (उज्ज्वल) और सुन्दर का, वाम (पु०) शब्द वक्र (टेढ़े) और मनोहर का वाचक है ॥ ५ ॥

नक्षत्रे मन्दिरे धिष्ययं, वसने गगनंऽम्बरं ।

परिधौ पादपे सालः, सिन्धुः स्रोतसि योषिति ॥६॥

भाषार्थ—धिष्यय (न०) शब्द, नक्षत्र और मन्दिर का वाचक है अम्बर (न०) शब्द, वसन (वस्त्र) और गगन (आकाश) का, साल (पु० न०) शब्द, परिधि (कोट) और पादप (वृक्ष) का तथा सिन्धु (पु०) शब्द, स्रोतस् (नदी) और योषित् (स्त्री) का वाची है ॥ ६ ॥

सारसः शकुनौ धूर्ते, केननं दीधितौ ध्वजे ।

अयूखः कीलके दीप्तौ, पतङ्गः शलभे रवौ ॥ ७ ॥

भाषार्थ—सारस (पु०) शब्द, शकुनि (पत्नी) और धूर्त (चालाक) का, केतन (न०) शब्द, दीधिति (किरण) और ध्वज (पताका) का, मयूख (पु०) शब्द, कीलक और दीप्ति का, एवं पतंग (पु०) शब्द, शलभ और रवि (सूर्य) का वाची है ॥ ७ ॥

अञ्जनः कज्जले नागे, सारङ्गः पृषते गजे ।
सरलः प्रगुणे वृक्षे, पुन्नागः सन्नरे तरौ ॥ ८ ॥

भाषार्थ—अञ्जन (पु० न०) शब्द, कज्जल और नाग (हाथी) का, सारङ्ग (पु०) शब्द, पृषत (हिरण) और गज (हाथी) का, सरल (पु०) शब्द प्रगुण (सीधे) और वृक्ष का, तथा पुन्नाग (पु०) शब्द, सन्नर (सञ्जन) और तरु (वृक्ष-विशेष) का वाची है ॥ ८ ॥

पाञ्चजन्योऽनले शंखे, कम्बुः शंखे मतङ्गजे ।
कस्वरो द्युभवे द्युम्ने, स्थन्दनं शकटेऽम्बुनि ॥ ९ ॥

भाषार्थ—पाञ्चजन्य (पु० न०) शब्द, अनल (अग्नि) और शंख का, कम्बु (पु०) शब्द, शंख और मतङ्गज (हाथी) का, कस्वर (पु०) शब्द, द्युभव (देव) और द्युम्न (धन) का, एवं स्थन्दन (न०) शब्द, शकट (गाड़ी) और अम्बु (जल) का वाची है ॥ ९ ॥

अद्रिं गिरिवनस्पत्योः, शिखरी तरुभूधयोः ।
राजा चन्द्रमहीपत्योः, द्विजो दशनविप्रयोः ॥ १० ॥

भाषार्थ—अद्रि, (पु०) शब्द, गिरि और वनस्पति का, शिखरिन् (पु०) शब्द, तरु और भूधू (पहाड़) का, राजन् (पु०) शब्द, चन्द्र और महीपति (राजा) का, एवं द्विज (पु०) शब्द, दशन (दांत) और विप्र (ब्राह्मण) का वाची है ॥ १० ॥

मोचामरस्त्रियोः रम्भा, कदली ध्वजमोचयोः ।

अशोकः सुमनस्तर्वाः, सुमनाः सुरपुष्पयोः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—रम्भा (स्त्री) शब्द, मोचा (केल) और अमर-स्त्री (देवागना) का, कदली (स्त्री) शब्द, ध्वज और मोचा का, अशोक (पु०) शब्द, सुमनस् (पुष्प) और तरु का, एवं सुमनस् (पु०) शब्द, सुर (देव) और पुष्प का वाची है ॥ ११ ॥

मुक्त्वारजतयोस्तारो, भूरि भूयः सुवर्णयोः ।

पानीयदुग्धयोः क्षीरं, पयः सलिलदुग्धयोः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—तार (पु०) शब्द, मुक्ता और रत्न (चांदी) का, भूरि (अ०) शब्द, भूयस् (बाहुल्य) और सुवर्ण का, क्षीर (न०) शब्द, पानीय और दुग्ध का एवं पयस् (न०) शब्द, सलिल (जल) और दुग्ध का वाची है ॥ १२ ॥

कालप्रकर्षयोः काष्ठा, कोटिः संख्याप्रकर्षयोः ।

रन्धूसंश्लेषयोः सन्धिः, सिन्धुर्नदसमुद्रयोः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—काष्ठा (स्त्री) शब्द, काल और प्रकर्ष (बड़प्पन) को, कोटि (स्त्री) शब्द, संख्या और प्रकर्ष को, सन्धि (स्त्री) शब्द, रन्धू (छिद्र) और संश्लेष (मिलाप) को तथा सिन्धु (पु०) शब्द, नद और समुद्र को कहता है ॥ १३ ॥

निषेधदुःखयोर्बाधा, व्यामोहो मूर्खमौढ्ययोः ।

कौपीनाकार्ययोर्गुह्यं, कीलालं रुधिराम्भसोः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—बाधा (स्त्री) शब्द, निषेध और दुःख का, व्यामोह (पु०) शब्द, मूर्ख और मौढ्य को, गुह्य (न०) शब्द, कौपीन (लंगोटी) और अकार्य (पाप) को, तथा कीलाल (न०) शब्द, रुधिर और अम्भस को कहता है ॥ १४ ॥

मौल्यसत्कारयोरर्घो, जात्यः श्रेष्ठकुलीनयोः ।

• मेघवत्सरयोरब्द-स्ताक्षर्यो ह्यगरुन्मतोः ॥ १५ ॥

भाषार्थ—अब्द (पुं०) शब्द, मेघ और वत्सर (वर्ष) को, जात्य (पुं०) शब्द, श्रेष्ठ और कुलीन को, अर्घ (पुं०) शब्द, मौल्य (कीमत) और सत्कार को, तथा ताक्षर्य (पुं०) शब्द, ह्य (घोड़ा) और गरुन्मत् (गरुड़) को कहता है ॥ १५ ॥

स्तब्धतास्थूणयोः स्तम्भ-श्चर्चा चिन्ता वितर्कयोः ।

हरकीलकयोः स्थाणुः, स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः ॥ १६ ॥

भाषार्थ—स्तम्भ (पु०) शब्द, स्तब्धता (धीरता) और स्थूण (थम्भा) को, चर्चा (स्त्री) शब्द, चिन्ता और वितर्क (विचार) को तथा स्थाणु (पुं०) शब्द, हर (महादेव) और कीलक (कीला) को और स्वैर (पु०) शब्द, स्वच्छन्द (स्वतन्त्र) और मन्द (धीर) को कहता है ॥ १६ ॥

शङ्कुसंकीर्णविवरे, पलालाग्नौ च कीलके

संख्यायां काननोद्भूते, वहौ दावो दवोऽपि च ॥ १७ ॥

भाषार्थ—शंकु (पु०) शब्द, सकीर्णविवर (छोटा छिद्र) पलालाग्नि (भूसे की आग) कीलक और संख्या को कहता है। दाव और दव (पुं०) ये दोनों शब्द, जंगल में लगी हुई अग्नि अर्थात् दमार के वाचक हैं ॥ १७ ॥

**कीनाशः कृपणे भृत्ये, कृतान्ते पिशिताशिनि ।
तथा पुण्यजनान् प्राहुः, सज्जनान् राक्षसानपि ॥ १८ ॥**

भाषार्थ—कीनाश (पु०) शब्द, कृपण, भृत्य, कृतान्त (यम) पिशिताशिन् (मास भक्षी) को कहता है तथा पुण्य-जनों अर्थात् पुण्यात्मा पुरुषों को, सज्जनोंको और राक्षसों को भी कहता है ॥ १८ ॥

**विरोचनो रवौ चन्द्रे, दनुसूनौ हुताशने ।
हंसो नारायणे वृध्ने, यतावश्वे सितच्छदे ॥ १९ ॥**

भाषार्थ—विरोचन (पु० न०) शब्द, रवि, चन्द्र, दनुसूनु, (प्रद्युम्न) और हुताशन (अग्नि) को कहता है। हंस (पु०) शब्द, नारायण, वृध्न (सूर्य) यति (साधु) अश्व (घोड़ा) और सितच्छद (कमल) को कहता है ॥ १९ ॥

**सोमश्चन्द्रोऽमृतं सोमः, सोमो राजा युगादिभूः ।
सोमः प्रताननीभेदः, सोमः पौलस्त्यदिक्पतिः ॥**

भाषार्थ—सोम (पु०) शब्द, चन्द्रमा, अमृत, राजा, युगा-दिभू, (ब्रह्मा) और लताविशेष तथा पौलस्त्यदिक्पति (वरुण) को कहता है ॥ २० ॥

भजो विधिरजो विष्णु-रजः शम्भुरजस्तमः ।

अजस्त्रैवार्षिकी ब्रीहिरजो रामपितामहः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—अज (पु०) शब्द, विधि (ब्रह्मा) विष्णु, शम्भु, (महादेव) अन्धकार, और तीनवर्षकीशालि को कहता है तथा रामचन्द्र जी के पितामह (बाबा) को भी अज कहते हैं ॥ २१ ॥

शुद्धेऽनुपहते बन्हौ, ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।

आषाढेऽध्यात्मसंविता, ब्रह्मचर्ये शुचिर्मता ॥ २२ ॥

भाषार्थ—शुचि (स्त्री) शब्द के आठ अर्थ है । वे ये है शुद्ध, अनुपहत, बहि, ब्राह्मण, उत्तममन्त्री, आषाढ़ (महीना) अध्यात्मज्ञान, और ब्रह्मचर्य ॥ २२ ॥

अर्थोऽभिधेयैरवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।

भावः पदार्थचेष्टात्मसत्ताभिप्रायजन्मसु ॥ २३ ॥

भाषार्थ—अर्थ (पु०) शब्द के पांच अर्थ है वे, अभिधेय (वाच्य) रै (धन) वस्तु, प्रयोजन, और निवृत्ति, ये हैं । भाव (पु०) शब्द के, छः अर्थ हैं वे, पदार्थ, चेष्टा, आत्मा, सत्ता, अभि-प्राय और जन्म (उत्पत्ति) ये हैं ॥ २३ ॥

प्रायो भूमोपमार्तक्यप्रभृत्यन्ननिवृत्तिषु ।

अन्तः पदार्थसामीप्यधर्मसत्त्वव्यतीतिषु ॥ २४ ॥

भाषार्थ—प्रायधु (अ०) शब्द के छः अर्थ हैं वे ' भूमन् (बाहुत्य) उपमा, आर्तक्य, प्रभृति (आदि), अन्न और निवृत्ति, ये है अन्त (पु०) शब्द, पदार्थ, सामीप्य, धर्म, सत्व (बल) व्य-तीति (अखीर) इन पांच अर्थों को कहता है ॥ २४ ॥

अचोद्यूते विरुथाङ्गे, नयनादौ विभीतके ।

सारः श्रेष्ठे बलं वित्ते, केशे जलचरे स्थिरे ॥ २५ ॥

भाषार्थ—अच (पु०) शब्द, के द्यूत (जुवा) विरुथाङ्ग (सेना के अंग-सिपाही वगैरा) नयन और आदि पद से धुर, व्यवहार, आदि तथा विभीतक (भयानक) को कहता है। सार, (पु०) शब्द के छह अर्थ हैं श्रेष्ठ, बल, वित्त, केश, जलचर और स्थिर ॥ २५ ॥

वाचि वारि पशौ भूमौ, दिशि लोमनि पवौ दिवि ।
विशिखे दीधितौ दृष्टा-वेकादशसु गौर्मतः ॥ २६ ॥

भाषार्थ—गो (पु० स्त्री०) शब्द के ग्यारह अर्थ हैं वे ये ह वाच् (बोली) वार् (पानी) पशु, भूमि, दिश्, लोमन् (रोम) पवि (वज्र) द्यु (आकाश) विशिख (दाण) दीधिति (किरण) और दृष्टि ॥ २६ ॥

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ, वासवे दर्दुरे ह्ये ।

मृगेन्द्रे वानरे वायौ, दशस्वपि हरिः स्मृतः ॥ २७ ॥

भाषार्थ—हरि (पु०) शब्द का प्रयोग इन दश अर्थों में किया जाता है चन्द्र, सूर्य, यम, विष्णु, वासव (इन्द्र) दर्दुर, (मेंढक) ह्य (घोड़ा) मृगेन्द्र (सिंह) वानर (वन्दर) और वायु ॥ २७ ॥

पद्मे करिकरप्रान्ते, व्योम्नि खड्गफले गदे ।

वाद्यभायडमुखे तीर्थे जले पुष्करमष्टसु ॥ २८ ॥

भाषार्थ—गुष्कर (न०) शब्द के आठ अर्थ हैं वे—पद्म (कमल), हाथी की सूँड़ के अग्रभाग वाली अंगुली, व्योमन् (आकाश), तलवार की मूठ, गद, वाद्यभाण्डमुख. तीर्थ और जल ये हैं ॥ २८ ॥

**शृङ्गारादौ कषायादौ, घृतादौ च विषे जले ।
निर्यासे पारदे रागे, वीर्येऽपि रस इष्यते ॥२९॥**

भाषार्थ—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, क्षीभत्स और अद्भुत ये आठ काव्य गत रस हैं इनमें, कषाय तित्त, कटुक, आम्ल, मिष्ट, ये पाच रस पुद्गल के गुण हैं इनमें, तथा घी, लवण, दधि, दुग्ध, तैल, मिठाई ये छह भोजन के स्वाद बढ़ाने वाले रस हैं इनमें, और विष, जल, निर्यास, पारद (पारा) राग, वीर्य, इनमें रस (पु०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ २९ ॥

**तीर्थं प्रवचने पात्रे, लब्धाम्नाथे विदाम्बरे ।
पुण्यारण्ये जलोत्तारे, महासत्ये महामुनिौ ॥३०॥**

भाषार्थ—तीर्थ (न० पु०) शब्द, प्रवचन (आगम) पात्र (वर्तन) लब्धाम्नाय-महत्त्व-को जैसे कि इस वक्तु, महावीर स्वामी की आम्नाय है इसलिये उनका तीर्थ कहा जाता है । तथा विदाम्बर (परिडत) पुण्यारण्य (शिखर सस्मेद आदि) जलोत्तार (सीढ़ी) महासत्य, और महामुनि को कहता है ॥ ३० ॥

**धातुः पञ्चसु लोहेषु, शरीरस्थ रसादिषु ।
पृथिव्यादिचतुष्के च, स्वभावे प्रकृतावपि ॥३१॥**

भाषार्थ—धातु (पुं०) शब्द के पांच अर्थ हैं । लोहादि

(१) जैसे चांदी, सोना वगैरा । शरीर के रसादि (२) जैसे रस, रक्त, मांस, मेदा, मज्जा, हड्डी, शुक्र (वीर्य) । पृथिवी आदि (३) जैसे पृथिवी, अप्, तेज, वायु । तथा स्वभाव (४) और प्रकृति ।

प्रधानशृङ्गलांगूलभूषापुण्ड्रप्रभावना ।

ध्वजलक्ष्मत्तुरङ्गेषु, ललामो नवसु स्मृतः ॥३२॥

भाषार्थ—प्रधान, शृङ्ग (सींग) लांगूल (पूछ), भूषा (भूषण), पुण्ड्र (सांप), प्रभावना, ध्वज, लक्ष्मन्, और तुरंग (घोड़ा) ये नौ ललाम (पु०) शब्द के अर्थ हैं अर्थात् ललाम् शब्द इन नौ अर्थ को कहता है ॥ ३२ ॥

आकृतावक्षरे रूपे, ब्राह्मणादिषु जातिषु ।

माल्यानुलेपने चैव, वर्णः षट्सु निगद्यते ॥३३॥

भाषार्थ—आकृति अक्षर (अ आ आदि), रूप, (ब्राह्मण, चंद्रिय, वैश्य, शूद्र) जाति, माल्य (माला) और अनुलेपन (उपटना) ये छह, वर्ण (पुं०) शब्द के अर्थ हैं ॥ ३३ ॥

आकारादावुदात्तादौ, षड्जादौ निस्वने स्वरः ।

समयाचारसिद्धान्त, कालेषु समयः स्मृतः ॥३४॥

भाषार्थ—अ आ आदि, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि षड्ज आदि (निषाद, ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत, पञ्चम) निस्वन ये सब स्वर (पु०) शब्द के अर्थ है समय (संकेत) आचार, सिद्धान्त (आगम) और काल ये सब समय (पु०) शब्द के अर्थ है ॥ ३४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते, सैन्यं तन्तौ परिच्छिदं ।

सत्वमोजसि सत्ताया, सुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु ॥ ३५ ॥

भाषार्थ—तन्त्र (न०) शब्द के प्रधान, सिद्धान्त, सैन्य (सेना), तन्तु और परिच्छिद (परिग्रह) ये पांच अर्थ है सत्व (न०) शब्द के, ओजस् (तेज), सत्ता (अस्तित्व) उत्साह, स्थेम्न (स्थिर) और जन्तु, ये पांच अर्थ हैं ॥ ३५ ॥

रूपादौ तन्तुषु ज्याया-मप्रधाने नद्ये गुणः ।

ज्ञानचारित्रमोक्षात्म-श्रुतिषु ब्रह्मवाग्वरा ॥ ३६ ॥

भाषार्थ—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि, तन्तु, ज्या, धनुष् की डोरी-तथा अप्रधान-गौण-और नय इन पांच अर्थों में गुण शब्द का प्रयोग होता है वह पुल्लिङ्ग है । ज्ञान, चारित्र, मोक्ष, आत्मा और श्रुति (वेद) इन पांच अर्थों में ब्रह्मवाच् (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३६ ॥

अवकाशे क्षणे वस्त्रे, वहिर्योगे व्यतिऋत्ने ।

मध्येऽन्तःकरणे रन्ध्रे, विशेषे विरहेऽन्तरं ॥ ३७ ॥

भाषार्थ—अवकाश (छुट्टी) क्षण, वस्त्र, वहिर्योग, व्यतिक्रम, मध्य, अन्तःकरण (मन) रन्ध्र, विशेष, और विरह इन दश अर्थों में अन्तर (न०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३७ ॥

हेतौ निदर्शने प्रश्ने, स्तुतौ कण्ठसमीकृतौ ।

आनन्तर्येऽधिकारार्थे, माङ्गल्ये चाथ हृष्यते ॥ ३८ ॥

भाषार्थ—हेतु, निदर्शन (दृष्टान्त) प्रश्न, स्तुति, करठसमीकृति अर्थात् किसी पुस्तक का प्रारम्भ आनन्तर्य (अव्यवहितता), अधिकार और मंगल इन आठ अर्थों में अथ (अ०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३८ ॥

हेतावेवंप्रकारादौ, व्यवच्छेदे विपर्यये ।

प्रादुर्भावे समाप्तौ च, इतिशब्दः प्रकीर्तितः ॥ ३९ ॥

भाषार्थ—हेतु, एवंप्रकार आदि, व्यवच्छेद, विपर्यय, प्रादुर्भाव, (उत्पत्ति) समाप्ति इन अर्थों में इति (अ०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३९ ॥

धर्मो धनुष्यहिंसादा-वुत्पादादाव्ये नये ।

द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते, जीवादौ दारुवैकृते ॥ ४० ॥

भाषार्थ—धनुष, अहिंसा, सत्य आदि, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, अय (विधि) और नय इन अर्थों में धर्म शब्द का प्रयोग होता है । क्रियाश्रय अर्थात् जिसमें क्रिया पाई जाय, वित्त (धन) जीव, अजीव और काठ से बनाए हुए मंगल द्रव्य आदि इन अर्थों में द्रव्य (न०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४० ॥

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु, संसारिण्यपि पुद्गलः ।

अकर्मकर्मनोकर्म-जातिभेदेषु वर्गणा ॥ ४१ ॥

भाषार्थ—मूर्तिवाले पदार्थ और संसारी जीवों में पुद्गल (पु०) शब्द का प्रयोग होता है । अकर्म अर्थात् कर्म से भिन्न पुद्गल स्कन्ध, कर्म ज्ञानाधारणादि, नोकर्म औदारिक, वैक्रियिक

अहारक ये तीन शरीर और छह पर्व्याप्ति (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन) रूप होने वाले पुद्गल, और जातिभेद इन में वर्गणा (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४१ ॥

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।

वैराग्यस्यावबोधस्य, षण्णां भग इति स्मृतः ॥४२॥

भाषार्थ—सम्पूर्णा ऐश्वर्य, वीर्य, यशस्, श्री वैराग्य अवबोध इन छह को भग (पुं०) कहते हैं ॥ ४२ ॥

प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये, विविक्ते निर्वृतावपि ।

लब्धिः केवलवोधादा—विष्टाप्तौ नियतौ श्रियां ४३

भाषार्थ—कैवल्य (न०) शब्द, आर्हन्त्य अर्थात् अर्हन्त भावान की अनन्त चतुष्टयरूप लक्ष्मीको, विविक्त—निर्जन स्थानको, और निर्वृति (मोक्ष) को कहता है । केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि, इष्टाप्ति अर्थात् इष्ट वस्तुकी प्राप्ति, नियति (कर्म) श्री (लक्ष्मी-शोभा) इन अर्थोंमें लब्धि (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४३ ॥

अनेकान्ते च विद्यादौ, स्यान्निपातः शुभे क्वचित् ।

दर्शनादौ मणौ रत्नं, भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति ॥४४॥

भाषार्थ—स्यात् (अ०) शब्द का प्रयोग, अनेकान्त और विद्या आदि में होता है अर्थात् स्यात् शब्द अनेकान्त जोकि जैनियोंने ही माना है जिसका अर्थ होता है कि सब पदार्थ अनेक धर्मवाले हैं, उसको और विद्या आदि को भी कहता है तथा कहीं २ शुभ अर्थ में भी स्यात् शब्द का प्रयोग होता है । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान,

सम्यक्चारित्र और मणि इनमें रत्न (न०) शब्द का प्रयोग होता है । भव्य (पुं०) शब्द का प्रयोग, शस्त (समीचीन अर्थात् प्रशंसा योग्य वस्तु) में और प्रसेत्स्यत् (मोक्ष की योग्यता रखने वाले और सिद्ध होने वाले जीव) में होता है ॥ ४४ ॥

परमात्मा जिने सिद्धे, परमेष्ठ्यर्हदादिषु ।

सिद्धः सिद्धनिषद्याया-मर्हत्सिद्धश्रियामपि ॥४५॥

भाषार्थ—जिन, सिद्ध और अर्हत् आदि पंच परमेष्ठी इन अर्थों में परमात्मन् (पुं०) शब्द का प्रयोग किया जाता है । सिद्ध (पुं०) शब्द का प्रयोग, सिद्धनिषद्या अर्थात् सिद्धों के ठहरनेके स्थान में और अर्हत् तथा सिद्ध की लक्ष्मी में होता है ॥

अर्हत्सिद्धमितिद्वाव-प्यर्हत्सिद्धाभिधायिनौ ।

अर्हदादीनपि प्राहुः, शरणोत्तममङ्गलान् ॥४६॥

भाषार्थ—अर्हत् और सिद्ध ये दोनों शब्द अर्हत् तथा सिद्ध के वाची है आचार्य लोगों ने अर्हत् आदि परमेष्ठियों को शरण, उत्तम और मंगलरूप कहा है ॥ ४६ ॥

इति कविशैरोमणि श्रीमद्भद्रनञ्जयकविविरचिता अनेकार्थ
नाम-माला समाप्ता ।



अनुक्रमणिका ।

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-------------|---------|-----------|---------|-------------|---------|
| अ. | | अमृतोद्भव | २५ | अंशु | ४५ |
| अन्तेवासिन् | ४ | अपारवार | २५ | अर्चिष् | ४५ |
| अवनि | ५ | अकूपार | २५ | अर्यमन् | ४६ |
| अचल | ८ | अर्णव | २६ | अर्क | ४६ |
| अद्रि | ८ | अनुग | २६ | अब्ज | ५१ |
| अधिप | १० | अनुजीविन् | २६ | अश्व | ५२ |
| अनोकुह | ११ | अनुचर | २६ | अर्धन् | ५२ |
| अंहिय | ११ | अंगना | ३० | अम्बर | ५३ |
| अग | ११ | अवला | ३१ | अभ्र | ५३ |
| अटवी | १३ | अभिसारिका | ३५ | अन्तरिक्ष | ५३ |
| अरण्य | १३ | असुपति | ३७ | अदितिसुत | ५६ |
| अरण्यानीचर | १४ | अपघन | ३८ | अमर | ५६ |
| अम्भस् | १५ | अङ्ग | ३८ | अप्सरानाथ | ५६ |
| अम्बु | १५ | अपत्य | ३६ | अम्बर | ६१ |
| अर्णोस् | १५ | अर्भक | ४० | अनिल | ६२ |
| अप् | १५ | अवरज | ४२ | अंजनात्मज | ६२ |
| अम्बुधि | १६ | अनुज | ४३ | अग्नि | ६४ |
| अनिमिष | १७ | अग्रज | ४३ | अनल | ६५ |
| अभ्र | १८ | अराति | ४४ | अनलसुनु | ६६ |
| अनभ्राद् | १८ | अमित्र | ४४ | अज | ७२ |
| अशनि | १६ | अरि | ४४ | अनन्तात्मन् | ७३ |
| अरविन्द | २१ | असेव्य | ४४ | अधोक्षज | ७५ |
| अधि | २५ | आहित | ४४ | अनन्यज | ७७ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|--------------|---------|-----------|---------|
| अ. | | अंशुक | ११५ | अर्जुन | १४६ |
| अकाय | ७७ | अग्रज | ११६ | अवद्य | १५२ |
| अस्त्रशर | ८० | अन्त्यकाश्यप | ११६ | अधम | १५४ |
| अन्तकरण | ८१ | अङ्गराग | ११६ | अवदान | १५५ |
| अलि | ८२ | अमृत | १२३ | अग्रिमम् | ११७ |
| अस्त्र | ८३ | अनेहःपूर्ण | १२४ | अन्हाय | १५६ |
| असि | ८५ | अन्त्य | १२३ | अलम् | १५६ |
| अक्षौहिणी | ८६ | अन्वय | १२५ | अमा | १६० |
| अनीक | ८६ | अन्ववय्य | १२५ | अन्वीत | १६४ |
| अजि | ८७ | अहि | १२८ | अन्वित | १६४ |
| अनेकप | ८८ | अद्य | १३ | अध्वन् | १६४ |
| अष्टापद | ९० | अंहस् | १३१ | अप्राज्ञ | १६८ |
| अष्टपात् | ९० | अवसथ | १३३ | अहंकृत | १६६ |
| अर्जुन | ९३ | अम्बुजानन | १३७ | अधम | १७० |
| अलकानिलय | ९६ | अभ्यास | १४१ | अर्त्यर्थ | १७२ |
| अक्षि | ९६ | अभ्यर्ण | १४१ | अत्यन्त | १७२ |
| अफङ्ग | ९६ | अविदूर | १४२ | अमल | १७३ |
| अंश | १०० | अविलम्ब | १४२ | अद्भुत | १७३ |
| अधर | १०१ | अनन्तर | १४२ | अहो | १७२ |
| अग्नि | १०३ | अर्जुन | १४३ | अभियोग | १७४ |
| अनुकंपा | ११० | अन्तक | १४५ | अवसान | १७५ |
| अनुक्रोश | ११० | अजातरिपु | १४७ | अनुरहस | १७५ |
| अभिरुप | १११ | असित | १४८ | अभिलाषुक | १७६ |
| अर्हत् | ११४ | अलिप्रभ | १४८ | अरम् | १७६ |
| अम्बर | ११५ | अन्धकार | १४६ | अभिराम | १७६ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|------------|---------|------------|---------|
| अ. | | आखण्डल | ५७ | आज्ञा | १५५ |
| अवस्याय | १८० | आशा | ६१ | आत्यान्तिक | १६१ |
| अवसर्प | १८१ | आशुशुक्लणि | ६४ | आलम्ब्य | १६३ |
| अत्यन्ताय | १८२ | आत्मभू | १०३ | आश्चर्य | १७३ |
| अकस्मात् | १८२ | आस्वनित | ८१ | आशु | १७६ |
| अजर्य | १८७ | आयुध | ८३ | आनन्त्य | १६४ |
| अङ्ग्यास | १८८ | आस्य | ६८ | आवृत्ति | १९८ |
| अभीक्षण | १८८ | आनन | ६८ | आतपत्र | १६८ |
| अलीक | १८६ | आनन्द | १०६ | उ. | |
| अखिल | १६० | आशय | ११० | उभय | २ |
| अनारत | १६२ | आचार्य | १११ | उर्वी | ६ |
| अजस्र | १६२ | आस्थाना- | | उर्वरा | ६ |
| अन्वह | १६२ | धिपति | ११२ | उपत्यका | ६ |
| अङ्गीकृत | १६७ | आसन्दी | ११३ | उल्का | १६ |
| अस्तुंकार | १६७ | आभरणा | ११६ | उत्पल | २२ |
| अभय | २०० | आज्य | १२३ | उत्कलिका | २७ |
| आ. | | आम्नाय | १२५ | उक्रास | २७ |
| त्रागम | ४ | आगार | १२३ | उद्ग्रह | ४० |
| आकालिकी | १६ | आवास | १२३ | उत्तानशय | ४० |
| आपगा | २४ | आस्पद | १२३ | उष्ण | ४५ |
| आवलि | २७ | आलय | १२४ | उर्जस् | ४६ |
| आर्य | ३४ | आलम्ब्य | १२६ | उडु | ४८ |
| आत्मज | ३९ | आसन्न | १४१ | उग्र | ७० |
| आली | ४१ | आताम्र | १५० | उमापति | ७० |
| आकाश | ५३ | आदेश | १५५ | उपेन्द्र | ७४ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-------------|---------|------------|---------|------------|---------|
| उद्गम | ८० | उष्णवारण | १६८ | ईशान | १० |
| उष्ण | ६१ | ऊ. | | ईशतृ | १० |
| उत्तराशापति | ६६ | ऊर्जस्विन् | १६६ | ए. | |
| उरस् | १०२ | ऊरीकृत | १६७ | एकपत्नी | ३४ |
| उदर | १०२ | ऋ. | | एकपिङ्गल | ३५ |
| उत्तमांग | १०४ | ऋषि | ३ | एतस् | १३२ |
| उत्सव | १०९ | ऋक्ष | ४८ | एकागारिक | १७० |
| उदश्वित् | १२३ | ऋत | ६८२ | ऐ. | |
| उरग | १२६ | इ. | | ऐरावणाधिप | ५६ |
| उपमा | १३७ | इला | ६ | ऐश्वर्यकु | ११६ |
| उत्प्रेक्षा | १३६ | इन्द्र | १० | ओ | |
| उच्चावच | १५६ | इन | १० | ओष्ठ | १०१ |
| उच्च | १५६ | इन्दीवर | २१ | ओघ | ११५ |
| उच्चम | १५६ | इष्टा | ३३ | " | १४० |
| उच्छ्रित | १५६ | इष्ट | ३७ | ओर्जस्विन् | १६६ |
| उद्धत | १६६ | इन्दु | ४६ | ओ. | |
| उद्गीर्ष | १७० | इन | ५० | ओषधीश्वर | ४७ |
| उद्धर | १७० | इन्द्र | ५७ | क. | |
| उपल | १७१ | इन्द्रा | ७६ | कृतान्त | ४ |
| उद्यम | १७४ | इषु | ७८ | कु | ६ |
| उद्याग | १७४ | इभ | ८८ | कुम्भिनी | ६ |
| उत्साह | १७४ | इरा | १२१ | कपि | ९२ |
| उग्र | १७६ | इन्दुमौलि | ६९ | कक्ष | १३ |
| उत्कट | १८६ | ई. | | कानन | १३ |
| उररीकृत | १६७ | ईश्वर | १० | कान्तार | १३ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|--------|---------|---------------|---------|----------|---------|
| किरात | १४ | किरण | ४५ | कपर्दिन् | ७० |
| क | १५ | कौमुदिन् | ४७ | क | ७३ |
| कुश | १५ | कुमुदप्रिय | ४७ | कपुत्र | ७३ |
| कर्दम | २० | कलाभृत् | ४७ | कृष्ण | ७४ |
| कमल | २० | कान्तिमत् | ४७ | केशव | ७४ |
| कोकनद | २१ | कुमुदविप्रिय | ५१ | केशिसूदन | ७५ |
| कुवलय | २२ | कानीन | ५१ | काम | ७७ |
| कुमुद | २२ | कौशिक | ६० | कायरहित | ७७ |
| कैरव | २२ | काष्ठा | ६१ | कण | ७८ |
| कल्लोल | २७ | ककुप् | ६१ | कारड | ७८ |
| किंकर | २६ | काष्ठापाल | ६१ | कार्मुक | ७६ |
| कामनी | ३० | ककुप्पाल | ६१ | कोदण्डक | ७६ |
| कामुकी | ३१ | ककुव्गज | ६१ | कुसुम | ८० |
| कुल्या | ३२ | काष्ठागज | ६१ | कर्ण | ८१ |
| कलत्र | ३२ | काष्ठाम्बर | ६१ | कन्दर्प | ८३ |
| कान्ता | ३३ | ककुवम्बर | ६१ | केतु | ८४ |
| कुलटा | ३५ | कृशानु | ६५ | कौत्स्यक | ८५ |
| कामुकी | ३६ | कृशानुसुनु | ६६ | कृपाण | ८५ |
| कान्त | ३६ | कार्तिकेय | ६७ | करवाल | ८५ |
| कामिन् | ३७ | कुमार | ६७ | कदन | ८७ |
| कामुक | ३७ | कौश्रभेदिन् | ६७ | कलह | ८७ |
| काय | ३८ | कार्तिकेयपितृ | ६८ | कारिन् | ८८ |
| कलेवर | ३६ | कुमारपितृ | ६८ | कुम्भिन् | ८८ |
| कनीयस् | ४३ | कौचभेदिपितृ | ६८ | करेणु | ८६ |
| | | कपालिन् | ७० | केशरिन् | ६० |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|-----------|---------|-----------|---------|
| क. | | कृपा | ११० | कुरुशत्रु | १४७ |
| कण्ठीरव | ६० | करुणा | ११० | कीचकशत्रु | १४७ |
| क्रोड | ६१ | केवलिन | ११४ | कौन्तेय | १४७ |
| करभ | ९१ | काश्यप | ११५ | कौरव्य | १४८ |
| कौलेयक | ६२ | कुंकुम | ११८ | कृष्ण | १४८ |
| कुक्कुर | ६२ | कस्तूरि | ११८ | कल | १४८ |
| काञ्चन | ६३ | कर्पूर | ११८ | कार्मुकिन | १४४ |
| कनक | ६३ | काञ्ची | १२० | काली | १५२ |
| कलधौत | ६३ | कटिसूत्र | १२० | कलमाषी | १५२ |
| कार्तस्वर | ६४ | कादम्बरी | १२१ | कौसुम | १५२ |
| कस्वर | ६५ | कालशेय | १२३ | किञ्जलक | १५२ |
| कुबेर | ६५ | कुल | १२५ | कलक | १५३ |
| कर्ण | ६८ | कोकिन | १२६ | किञ्जलक | १५३ |
| कटाक्ष | ६६ | कपालिन | १२७ | क्रठोर | १५६ |
| केकर | ६६ | करण | १३० | किंघदन्ती | १५६ |
| कराङ्गुलि | १०० | किलिवष | १३१ | कठिन | १५६ |
| कर | १०० | कलिल | १३२ | कर्कश | १५६ |
| कण्ठ | १०१ | कक्षा | १३७ | काहल | १५७ |
| कुक्षि | १०२ | केदम्बक | १४० | कोमल | १५७ |
| कुच | १०२ | केशवाग्रज | १४३ | कीर्ति | १५४ |
| कटि | १०३ | कपिध्वज | १४३ | कुञ्ज | १६० |
| क्रम | १०३ | कर्णशुबिन | १४५ | किञ्चित् | १५८ |
| क | १०४ | किरीटिन | १४५ | कञ्चिन | १५८ |
| क्रेकृत | १०७ | काल | १४५ | कृतिन् | १६५ |
| कोप | १०६ | कृतान्त | ५४५ | कुराबिन | १६५ |
| क्रोध | १०६ | | | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|----------|---------|----------|---------|--------------|---------|
| कोविद | १६५ | केशबन्धन | १६६ | गिरि | ८ |
| कितव | १६६ | कुशल | २०० | गोलाङ्गुल | १२ |
| कद्वद | १६७ | कुच्छ | १८६ | गहन | १३ |
| कौतुक | १७३ | कल्याण | २०० | गोध | २८ |
| कृश | १७४ | ख. | | गेहिनी | ३२ |
| कीनाश | १७६ | खरदण्ड | २० | गृह | ३२ |
| कृपण | १७६ | खला | ३५ | गणिका | ३५ |
| कान्त | १७८ | खल | ४४ | गभस्ति | ४६ |
| कमन | १७८ | ख | ५३ | गो | ४५ |
| कम्र | १७८ | खेचर | ५४ | गृहाधिप | ४६ |
| कमनीय | १७८ | खग | ७८ | गगन | ५३ |
| कृति | १८३ | खङ्ग | ८६ | गोत्रशत्रु | ५८ |
| कदली | १८३ | खूकृत | १०६ | गीर्वाणेश | ५८ |
| कीचक | १८४ | खेद | १०६ | गन्धवाह | ६२ |
| कष्ट | १८६ | ख | १३० | गुह | ६७ |
| कृत्स्न | १९० | खेत | १३४ | गिरीश | ६६ |
| कलह | १९१ | खात | १३४ | गुहपितृ | ६८ |
| कन्यापति | १९२ | ख्याति | १५५ | गंगा | ७१ |
| कवच | १९८ | खलु | १५६ | गोमिनी | ७६ |
| कूर्पास | १९८ | खलु | १७३ | गोविन्द | ७६ |
| कंधुक | १९८ | खंड | १९० | गुण | ८२ |
| केश | १९९ | ग. | | गव्या | ८२ |
| कच | १९९ | ग्रन्थ | | गज | ८८ |
| कबरी | १९९ | गह्वरी | | ग्रामशार्दूल | ८२ |
| | | गो | | गुलिका | ८४ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|------------|---------|--------------|---------|-------------|---------|
| ग. | | गहन | १८६ | चेतसु | ८१ |
| गल | १०१ | गर्त | १६३ | चिन्ह | ८४ |
| ग्रीवा | १०१ | गह्वर | १६३ | चम | ८६ |
| गिर | १०४ | घ. | | चमूर | ६० |
| गर्ज | १०५ | घन | १६ | चक्षुष | |
| गौतम | ११६ | घनाघन | १८ | चलन | १०३ |
| गुणि | ११६ | घन | १८ | चरण | १०३ |
| गरुड | १२६ | घृष्टि | २१ | चेल | ११७ |
| गरुत्मत्र | १२६ | घ्राण | १०२ | चीर | ११७ |
| गेह | १३३ | घनसार | ११८ | चक्रांग | १२६ |
| गृह | १३३ | घोष | १६५ | चतुष्पाद | १६२ |
| गोपुर | १३५ | घन | १७१ | चतुर | १६६ |
| गुरुस्थान | १३७ | घोर | १८६ | चाटुकृत | १६६ |
| गाण्डीविन् | १४४ | च. | | चौरैकृगारिक | १७० |
| गौर | १४१ | चला | ३१ | चोद्य | १७३ |
| गौरी | १५१ | चंडी | ३३ | चित्र | १७३ |
| गुणात्रलि | १५५ | चन्द्रमस | ४७ | चार | १७६ |
| गो | १६२ | चन्द्र | ४७ | चित्तहारि | १८० |
| गङ्गा | १६५ | चक्रवाकबन्धु | ५१ | चेतोहारि | १८० |
| गोमंडल | १६५ | चल | ६३ | चार | १८१ |
| गोत्र | १६७ | चलपुत्र | ६३ | चर | १८१ |
| गर्वित | १६८ | चतुर्मुख | ७२ | बिराय | १८२ |
| गृह्नर | १७१ | चक्रधर | ७६ | चिन्ह | १८३ |
| गृध्न | १७६ | चाप | ७६ | चिकुर | १६६ |
| गुणनिका | १८८ | चित्त | ८१ | चूड़ापाश | १८६ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|-------------|---------|----------|---------|
| चरवत् | १८१ | जातवेदःसुनु | ६६ | जव | १७ |
| छ. | | जाह्वी | ७१ | झ. | |
| छल | १३८ | जीवा | ८२ | झष | १७ |
| छन्न | १३६ | ज्या | ८२ | झषकेतु | ८४ |
| छल | १६१ | जिह्वाप | ६२ | झङ्कृत . | १०७ |
| छिद्र | १६३ | जातरूप | ६३ | झङ्कृत | १०७ |
| छत्र | १६८ | जनपद | ६७ | झटिति | १७६ |
| ज. | | जनान्त | ६७ | त | |
| जगती | ६ | जठर | १०२ | तपस्विन् | ३ |
| जल | १५ | जघन | १०३ | तापस | ३ |
| जीवन | १५ | जानु | १०३ | तट | ६ |
| जीमत | १८ | जन्हु | १०३ | तटी | ६ |
| जाया | ३२ | जगत्पति | ११० | तरु | ११ |
| जनी | ३२ | जगत | १०३ | तोय | १५ |
| जननी | ३८ | जिन | १०३ | तिमि | १७ |
| जनक | ३८ | ज्यायस् | ११५ | तडित | १८ |
| ज्येष्ठ | ४३ | जित्या | १४२ | तामरस | २० |
| ज्योतिष् | ४६ | जिष्णु | १४३ | तरङ्गिणी | २४ |
| जाङ्गल | ५५ | जनोदाहरण | १५४ | तीर | २६ |
| जवन | ६३ | जरठ | १५८ | तट | २६ |
| जवनपुत्र | ६३ | जीर्ण | १८५ | तनूदरी | ३१ |
| जवनसख | ६४ | जइ | १६७ | तनु | ३८ |
| ज्वलन | ६४ | जान | १६६ | तुक | ३६ |
| जातवेदस् | ६४ | जातमय | १७२ | तांक | ३६ |
| ज्वलनसुनु | ६६ | जीर्ण | १७४ | तनय | ४० |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|--------------|---------|-----------|---------|----------|---------|
| त | | तुला | १३७ | द्वैत | २ |
| तंजस् | ४५ | तति | १४० | दीक्षित | ४ |
| तारा | ४८ | तमस् | १४६ | दरीभृत् | ८ |
| तरणि | ४६ | तिमिर | १४६ | दन्त | ६ |
| तपन | ४६ | तम | १४६ | द्रुम | ११ |
| तिग्म | ४६ | तुङ्ग | १५८ | दुर्ग | १३ |
| तमोरि | ५० | त्यगातन | १६० | दस्यु | १४ |
| तिमिरारि | ५० | तस्कर | १७० | द्विरेफ | २४ |
| तुरग | ५२ | तूर्ण | १७७ | दारा | ३२ |
| तुरङ्गम | ५२ | तर | १७७ | दयिता | ३३ |
| तडित्वत् | ५६ | तुषार | १८० | दूती | ३५ |
| तुराषाह् | ६० | तुहिन | १८० | दारिका | ३६ |
| तनूनपात् | ६४ | तुषारकर | १८५ | दासी | ३६ |
| तनूनपात्सुनु | ६६ | तुहिनकर | १८५ | दयित् | ३७ |
| तोमर | ७८ | ताल | १८४ | देह | ३८ |
| तरवारि | ८५ | तीव्र | १८६ | दारक | ४० |
| तर्पनीय | ६४ | तिग्म | १८६ | द्विष् | ४४ |
| तुबाकोटि | १०७ | तरस्विन् | १६६ | द्विषन् | ४४ |
| तीर्थकर | ११४ | तेजस्विन् | १६६ | दुर्जन | ४४ |
| तीर्थकृत् | ११४ | तनुत्र | १६८ | दुष्ट | ४४ |
| तीर्थकर | ११४ | तिमिर | १८६ | द्वेषित् | ४४ |
| तक्र | १२३ | द | | दीधिति | ४५ |
| तारुण्य | १२४ | द्वय | २ | दुति | ४५ |
| तार्क्य | १२६ | द्वितय | २ | दीप्ति | ४६ |
| तुल्य | १३७ | द्वन्द्व | २ | दोषा | ४८ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|---------------|---------|--------------|---------|---------|---------|
| द. | | दंष्ट्रिन् | ६१ | दत्त | १७० |
| द्युम्नि | ४६ | द्रविन | ६५ | दृषत् | १७१ |
| दिन | ५० | द्रव्य | ६५ | दीन | १७६ |
| दिवा | ५० | द्रश् | ६६ | द्रुत | १७६ |
| दिवस | ५० | दृष्टि | ६६ | दर्शनीय | १८० |
| दिव् | ५३ | दोष | १०० | दीर्घ | १८५ |
| देव | ५६ | दोष्या | १०० | दारुण | १८६ |
| दिव् | ५६ | द्विप | ८६ | | ध |
| दिक | ६१ | दन्तत्रास | १०१ | धरा | ५ |
| दत्तकन्या | ६१ | दशनच्छद | १०१ | धात्री | ५ |
| दिकपाल | ६१ | दृष्ट | १०८ | धरणी | ६ |
| दिग्गज | ६१ | दशमीस्थ | १०८ | धरित्री | ६ |
| दिग्गम्बर | ६१ | द्वेष | १०६ | धानुष्क | १४ |
| दत्तकन्याम्बर | ६१ | दया | ११० | धुनी | २४ |
| दक्षकन्यागज | ६१ | दिव्यवाकपति | ११४ | ध्रुव | २८ |
| दत्तकन्यापाल | ६१ | दुग्ध | १२३ | धामन् | ४६ |
| दहन | ६५ | दुरित | १३१ | धुरि | ५२ |
| दहनसुनु | ६६ | दुष्कृत | १३२ | धूर्जटि | ६८ |
| द्युधुनी | ७१ | दैत्यारि | १४४ | धन्वन् | ७६ |
| दुहिशा | ७२ | दण्डभृत् | १४६ | धर्म | ७६ |
| ब्रामोदर | ७४ | दृढ | १५६ | धनुष् | ७६ |
| द्विरेफ | ८२ | द्राक | १५६ | ध्वजा | ८४ |
| दण्ड | ८६ | इतिहरि | १६१ | ध्वजिनी | ८६ |
| शन्तिन् | ८८ | देहिका | १६२ | धनद | ८६ |
| द्विरद | ८८ | देवानांप्रिय | १६७ | धन् | ८५ |

| शब्द . | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|--------------|---------|----------------|---------|-----------|---------|
| ध. | | नग | ११ | नीललोहित | ६६ |
| धमनीधम | १०१ | निषाद | १४ | नदीश्वर | ७१ |
| धिषणा | ११० | नीर | १५ | नारद | ७३ |
| धी | ११० | निर्घात | १६ | नारायण | ७४ |
| धर्मचक्रभृत् | ११४ | नलिन | २० | नाराच | ७८ |
| धिष्ण्य | १३२ | नीलाम्बुजन्मन् | २२ | | |
| धामन् | १३३ | निम्नगा | ५४ | निस्त्रिश | ८५ |
| धूलिकुहिम | १३४ | नद् | २४ | नाग | ८६ |
| धनञ्जय | १४५ | नदी | २४ | निषादिन् | ८६ |
| धर्मराज | १४६ | नर | २८ | नागारि | ८६ |
| धर्मात्मज | १४७ | नृ | २८ | नगरी | ९७ |
| धूम | १४८ | नृप | २८ | नयन | ९६ |
| धूम | १४८ | नारी | ३० | नेत्र | ९६ |
| ध्वान्त | १४६ | नितम्बनी | ३१ | निग्र | ९७ |
| धवल | १५० | नन्दन | ४० | नासा | १०२ |
| धूर्त | १६६ | ननन्द | ४३ | नितम्ब | १०३ |
| धूर्ति | १५३ | नक्षत्र | ४८ | नूपुर | १०७ |
| धीवर्जित | १६८ | निशा | ४८ | नैयायिक | १११ |
| धातु | १७१ | नक्तं | ४८ | नृपक्रतु | ११२ |
| धैर्य | १७५ | नमस् | ५३ | निवसन | ११५ |
| धम्मिल्ल | १६६ | नाक | ५६ | नाभिज | ११६ |
| | | नमुचिशत्रु | ५८ | नाथान्वय | ११६ |
| न. | | नभस्वत् | ६३ | नीलकरण | ११६ |
| नग | ८ | नभस्वत्पुत्र | ६३ | नाग | १२६ |
| नितम्ब | ९ | नभस्वत्सख | ६४ | निकेतन | १३३ |
| नाथ | १० | | | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|------------|---------|------------|---------|-----------|---------|
| निशान्त | १३३ | नदीष्णा | १६५ | पति | १० |
| निवृत | १३३ | नागरिक | १६७ | परिवृद्ध | १० |
| निकाय | १३४ | निशाचर | १७१ | पादप | ११ |
| निलय | १३४ | नितान्त | १७२ | प्लवग | १२ |
| निर्व्यूह | १३५ | न्यून | १७५ | पुलिन्द | १४ |
| निभ | १३८ | नेड | १६७ | पयस् | १५ |
| निकाय | १४० | नाभ | १६७ | पाथस् | १५ |
| निकर | १४० | नीच | १७० | पद्म | १६ |
| निकुरम्ब | १४० | नियन्त्रित | १७७ | पृथुरोमद् | १६ |
| निचय | १४१ | नियमित | १७८ | पाठीन | १७ |
| निकट | १४१ | नीहार | १८१ | पर्जन्य | १८ |
| नीलवसन | १४३ | नीहारकर | १८१ | परिषत् | २० |
| नील | १४८ | निगूढपुरुष | १८१ | पंक | २० |
| नीलपिङ्गली | १५२ | निस्तल | १८५ | पुण्डरीक | २१ |
| नियोग | १५५ | निज | १८८ | पुष्कर | २१ |
| नव्य | १५७ | निवेशन | १६२ | पारावार | २५ |
| नव | १५७ | नरक | १६३ | पार | २६ |
| नूतन | ५५७ | नैक | १६४ | पाली | २७ |
| न | १५६ | निसर्ग | १८८ | पुमस् | २८ |
| नीच | १६० | | | पत्ति | २६ |
| नीचैः | १६० | पृथिवी | | पदाति | २६ |
| नाथहरि | १६१ | पृथ्वी | | पदग | २६ |
| निपुण | १६५ | पर्वत | | पत्नी | ३२ |
| निष्णात | १६५ | प्रस्थ | | पुरन्ध्री | ३२ |
| | | पार्श्व | | प्रेयसी | ३३ |

| शब्द . | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|--------------|---------|---------------|---------|------------|---------|
| प. | | पिशित | ५५ | प्रसून | ८० |
| प्रेष्ठा | ३३ | पल | ५५ | पताका | ८५ |
| प्रमदा | ३३ | पेशिन् | ५५ | पृतना | ८६ |
| प्रणयनी | ३३ | प्राचीनबर्हि | ५७ | पोत्रिन् | ९१ |
| पतिवृता | ३४ | पाकशत्रु | ५८ | पत्तन | ९७ |
| पतिवृत्नी | ३४ | पुरन्दर | ५८ | पुरं | ९७ |
| पुनर्भू | ३५ | पुरुहूत | ६० | पुरी | ९७ |
| पुञ्जली | ३५ | पुलोमारि | ६० | पुर | ९७ |
| परयस्त्री | ३६ | पवन | ६२ | पुटभेदन | ९७ |
| प्रीत | ३७ | पवमान | ६२ | पाशि | १०० |
| प्रिय | ३७ | प्रभञ्जनपुत्र | ६३ | पुष्कारिन् | ८६ |
| प्रेयस् | ३७ | पवनपुत्र | ६३ | पुरोगति | ९२ |
| पितृ | ३८ | पवमानपुत्र | ६३ | पत्राधर | १०२ |
| पुत्र | ३९ | प्रभञ्जन | ६३ | पद् | १०३ |
| प्रजा | ३९ | पवनसख | ६४ | पद् | १०३ |
| पोत | ४० | पावक | ६४ | प्रारभ्य | १०४ |
| प्रियाम्बिका | ४३ | पावकसुनु | ६६ | प्रेरित | १०४ |
| पाद् | ४५ | पिनाकिन् | ६८ | प्रतीत | १०८ |
| प्रभा | ४५ | प्रमथाधिप | ६८ | परिचित | १०८ |
| पूषन् | ४६ | पद्मयोनि | ७२ | परास्तु | १०८ |
| पतंग | ४६ | पितामह | ७२ | प्रमोद | १०९ |
| पत्तिन् | ५४ | प्रजापति | ७३ | प्रमुद | १०९ |
| पत्रिन् | ५४ | पुरुषोत्तम | ७४ | प्रजा | ११० |
| पतात्रिन् | ५४ | पुष्प | ८० | प्राज्ञ | १११ |
| पतंग | ५४ | प्रसभ | ८० | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|----------------|---------|-----------|---------|-------------|---------|
| प | | पंक्ति | १४१ | पथिन् | १६४ |
| पंरिडत | १११ | पितृपति | १४६ | पिशुन | १७० |
| पत्ररिषद्य | ११२ | परंतराज्ञ | १४६ | प्रतिरोधक | १७० |
| प्रज्ञापति | ११५ | पाराडुर | १४६ | पारिपान्थिक | १७० |
| पीठ | ११३ | पाराडु | १५० | पुष्कल | १७३ |
| पुरुषाद्य | ११५ | पाताल | १५० | पुरातन | १७४ |
| प्रसाधन | | पक्षि | १५१ | पौरुष | १७५ |
| प्रसन्ना | १२१ | पालास | १५१ | प्रवीण | १६६ |
| • पयस् | १२३ | पिसङ्गी | १५१ | प्रस्तर | १७१ |
| • प्रायः पूर्ण | १२४ | पांसु | १५३ | पाषाण | १७१ |
| प्रावृषिक | २७ | पङ्क | १५४ | पुरातन | १७४ |
| पृषित | १२८ | प्रेष्य | १५५ | प्राध्वंकृत | १७७ |
| पन्नग | १२८ | प्रदेश | १५५ | पिनद्ध | १७७ |
| पुण्य | १३१ | प्रवृत्ति | १५६ | प्रशस्त | १७९ |
| पाप्मन् | १३१ | परुष | १५६ | प्रालेय | १८० |
| पाप | १३१ | पेशल | १५७ | प्रालेयकर | १८१ |
| पापजयिन् | १३२ | पुराण | १५८ | प्रशिधि | १८१ |
| पद | १३३ | प्राक्तन | १५८ | प्राणहे | १८२ |
| परिखा | १३४ | पराग | १५२ | प्रायेण० | १८३ |
| प्राकार | १३५ | प्रत्यग्र | १५७ | पद्य | १८४ |
| परिधि | १३५ | पशु | १६२ | प्रांशु | १८५ |
| प्रतौली | १३५ | प्रेम | १६३ | पृथुल | १८५ |
| प्रासाद | १३५ | • प्रचर | १६४ | पृथू | १८५ |
| पद | १३५ | पटु | १६५ | प्रकृति | १८८ |
| पूग | १३६ | प्रगल्भ | १६६ | परिवाद | १६१ |
| प्रकर | १४१ | | | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-------------|---------|----------|---------|--------------|---------|
| परिणयनं | १६२ | बधु | ३० | ब्रीहि | १६८ |
| पाताल | १६३ | बाला | ३१ | बन्धुर | १७६ |
| प्रभूत | १६४ | बल्लभा | ३३ | बलात् | १८२ |
| प्रवीर | १६६ | बन्धकी | ३५ | बहुल | १८५ |
| पुष्कर | १८४ | बल्लभ | ३७ | बहुल | १६४ |
| प्रचुर | १६४ | बन्धु | ४२ | बहू | १६४ |
| प्राज्य | १६४ | ब्रध्न | ४६ | बाल | १६६ |
| पुष्कर | १६४ | बलशत्रु | ५८ | | |
| | | बिडौजस् | ५६ | भ. | |
| | | बृहन्न | ७३ | भित्तु | ३ |
| फलिनि | ११ | बलिसूदन | ७५ | भूमि | ५ |
| फलेग्राहिन् | ११ | वैजयन्ती | ८४ | भू | ५ |
| फुल्ल | ८ | बल | ८६ | भर्तृ | १० |
| फाणिन् | १२६ | बाहु | १०० | भंग | २७ |
| फलगुन | १४३ | " | १०० | भृत्य | २६ |
| फलगु | १५७ | वक्षस् | १०२ | भृतक | २६ |
| फुल्लक | १६२ | वृंहित | १०५ | भट | २६ |
| | | बुध | ११२ | भामिनी | ३० |
| | | ब्रह्मन् | ११६ | भीरु | ३० |
| वृत्त | ७ | वाद्धीन | १२४ | भामा | ३१ |
| वनस्पति | ११ | वर्हिन | १२६ | भार्या | ३२ |
| वलिमुख | १२ | वृषधर | १२८ | भ्रातृजानिन् | ४४ |
| वानर | १२ | ब्रज | १३८ | भानु | ४५ |
| बलाहक | १८ | ब्रज | १४१ | भास् | ४६ |
| विशानी | २३ | वृषसेन | १४४ | भय | ४८ |
| वल्गरी | २३ | | | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|----------|---------|---------|---------|---------------|---------|
| भ | | भावुक | २०० | मनस्विनी | ३४ |
| भानु | ४२ | भाविक | २०० | मुक्ता | ३५ |
| भव | ७० | भव्य | २०० | मातृ | ३८ |
| भागीरथी | ७१ | | म. | मूर्ति | ३६ |
| भूमिधर | ७६ | मुनि | ३ | मित्रयुक् | ४१ |
| भृङ्ग | ८२ | मौढ्य | ४ | मातुलानी | ४३ |
| भ्रमर | ८२ | मेदनी | ५ | मरीचि | ४५ |
| भर्मन् | ६३ | मही | ५ | महस् | ४६ |
| भारती | १०४ | मरुत् | ८ | मार्तण्ड | ४६ |
| भुवन | ११३ | मेखला | ९ | मयूखवत् | ५२ |
| भृषणा | ११६ | मर्कट | १२ | मेघपथ | ५३ |
| भुजंग | १२८ | मत्स्य | १६ | मांस | ५५ |
| भाग्य | १३१ | मीन | १७ | मरुत् | ५६ |
| भागधेय | १३१ | मेघ | १८ | मरुत्वत् | ५६ |
| भवन | १३२ | मुदिर | १८ | मघवत् | ६० |
| भरतान्वय | १४७ | महोत्पल | २१ | मरुत्सख | ६० |
| भो | १५८ | मीनाकर | २५ | मरुत् | ६२ |
| भृश | १७२ | मनुष्य | २८ | मातरिश्वन् | ६३ |
| भूरि | १६३ | मानुष | २८ | मरुत्पुत्र | ६३ |
| भूयिष्ठ | २६४ | मर्त्य | २८ | मातरिश्वपुत्र | ६३ |
| भाव | १६५ | मानुज | २८ | मरुत्सख | ६४ |
| भव | १६५ | मानव | २८ | मातरिश्वसख | ६४ |
| भास्कर | १९६ | मुग्धा | ३० | महेश्वर | ६८ |
| भासुर | १६६ | महिला | ३२ | मंदाकिनी | ७१ |
| भद्र | २०० | मानिनी | ३२ | मुरसूदन | ७५ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|-----------------|---------|------------|---------|
| म. | | मनीषा | ११० | मधु | १५२ |
| मधुसूदन | ७५ | मेधावत् | १११ | मकरन्द | १५२ |
| मन्मथ | ७७ | मल्लिका | ११३ | मलिन | १५३ |
| मदन | ७७ | महावीर | ११६ | मलीमस | १५४ |
| मकरध्वज | ७७ | महानि | ११६ | मा | १५६ |
| मार्गशा | ७८ | मृगनाभिजा | ११८ | मृदु | १५५ |
| मनस् | ८१ | माल्य | ११६ | महिषी | १६२ |
| मार | ८१ | माला | ११६ | मार्ग | १६४ |
| मौर्वी | ८२ | मेखला | १२० | मुग्ध | १६७ |
| मधुव्रत | ८२ | मदिरा | १२१ | मूढ | १६७ |
| मण्डलाग्र | ८५ | मद्य | १२१ | मूक | १६७ |
| मतंगज | ८८ | मैरेय | १२१ | मूर्ख | १६७ |
| महाहव | ८७ | मधुवारा | १२१ | मन्द | १६७ |
| मतंगम | ८८ | मद्यप | १२३ | मृगिन् | १६६ |
| मातंग | ८६ | मथित | १२३ | मंजु | १७६ |
| मृगेन्द्र | ९० | मराल | १२६ | मनोहर | १७८ |
| मथ | ९१ | मयूर | १२६ | मनोज्ञ | १८० |
| मण्डल | ९२ | मृग | १२८ | मनोहारि | १८० |
| मौक्तिक | ९४ | मृगाङ्क | १२८ | मृगाङ्क | १८१ |
| मुख | ९८ | मन्त्रपूतात्मन् | १३० | मोक्षा | १८३ |
| मूर्धन | १०४ | मन्दिर | १३१ | मुरज | १८४ |
| मञ्जीरक | १०७ | मत्तवारण | १३५ | मैत्री | १८७ |
| मृत | १०८ | मुखासन | १३६ | मैत्रेयिक | १८० |
| मन्यु | १०६ | मध्यमपाण्डव | १४४ | मुहुर्मुहु | १८८ |
| मुद | १०६ | मृत्यु | १४५ | मृषा | १८६ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|----------|---------|-------------|---------|---------------|---------|
| म | | यातृ | ८६ | रत्नस् | ५५ |
| मुधा | १८९ | यौवनिक | १२४ | रात्रिचर | ५५ |
| मोघ | १८६ | यौवन | १२४ | रोहिताश्व | ६५ |
| मर्मकोश | १६१ | यम | १४५ | रोहिताश्वसुनु | ६६ |
| मनस्विन् | १६६ | यमुन | १४६ | रुद्र | ६६ |
| मंगल | २०० | यमुनाध्रातृ | १४६ | रोपण | ७८ |
| मंद | १८६ | मुधिष्ठिर | १४८ | रण | ८७ |
| य. | | यशस् | १५४ | रात्रिजागर | ६२ |
| यमल | २ | युक्क | १६३ | रै | ६५ |
| युगल | २ | युत | १६३ | रूप्य | ६४ |
| युग | २ | योग्य | १८८ | रजत | ६४ |
| युग्म | २ | र. | | राजराज | ८६ |
| यम | २ | राजनृ | १० | राष्ट्र | ६७ |
| यति | ३ | रत्नाकर | २५ | रुष् | १०६ |
| योगिन् | ३ | रोधस् | २६ | राजनृ | ११२ |
| यादस् | १७ | रामा | ३१ | राजसूय | ११५ |
| योषित् | ३० | रमणी | ३३ | रुधिर | ८११ |
| योषा | ३० | रुपाजीवा | ३६ | रक्त | ११८ |
| युवति | ३१ | रमण | ३७ | रुच्यै | ११६ |
| यमुनाजनक | ५१ | रिपु | ४४ | रसना | १२० |
| यमजनक | ५१ | रुचिष | ४५ | रेवतीदधित | १४३ |
| यातुधान | ५५ | रश्मि | ४६ | राजलक्ष्मन् | १४८ |
| यज्ञारि | ६६ | रजनी | ४८ | रक्त | १५० |
| युद्ध | ८७ | रवि | ४६ | रजस | १५३ |
| यन्तृ | ८६ | रथ्य | ५२ | रेणु | १५३ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|------------|---------|----------|---------|
| र. | | लोक | ११३ | व्याध | १४ |
| रे | १५८ | लेलिहान | १२८ | वार | १५ |
| राग | १६३ | लाङ्गल | १४२ | वारि | १ |
| रहस् | १७५ | लाङ्गलकर | १४२ | वन | १५ |
| रहस्य | १७५ | लोहित | १५० | विष | १५ |
| रंहस् | १७७ | लोहिनी | १५१ | वैशाखिणा | १७ |
| रय | १७७ | लक्ष्मन् | १५३ | विशारिन् | १७ |
| रमणीय | १७८ | लाञ्छन | १५३ | विद्युत् | १८ |
| रम्य | १७८ | लोह | १७२ | वज्र | १६ |
| रुचिर | १७६ | लुब्ध | १७६ | व्रतती | २३ |
| रोहिणीपति | १८५ | लघु | १७७ | वल्लरी | २३ |
| रम्भा | १८३ | लेश | १६० | वारिधि | २३ |
| रक्त | १६१ | लव | १६० | वारिराशि | २५ |
| रुधिर | १६१ | लोहित | १६१ | वीचि | २७ |
| रन्ध्र | १६३ | | | वेला | २७ |
| रस्य | १६३ | ब. | | विभ्रम | २७ |
| ल. | | वर्निन् | ३ | वनिता | ३० |
| लुब्धक | १४ | वसुमती | ५ | वामलोचना | ३१ |
| लता | २३ | विश्वम्भरा | ५ | वेश्या | ३६ |
| ललना | ३० | वसुधा | ६ | विलासनी | ३६ |
| लज्जिका | ३६ | वसुन्धरा | ६ | विट् | ३७ |
| लक्ष्मी | ७६ | विभु | १० | वर | ३६ |
| लतान्त | ८० | विष्टपिन् | ११ | वपुष् | ३८ |
| लपन | ६८ | विपिन | १३ | वयस्या | ४१ |
| लब्ध | १०८ | वन | १३ | वैरिन् | ४४ |
| | | वनेचर | १३ | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|--------------|---------|--------------|---------|----------|---------|
| व. | | वरेण्युसख | ६४ | वारणा | ८८ |
| विभावसु | ४६ | वन्धि | ६४ | व्याघ्र | ६० |
| विधु | ४७ | वैश्वानर | ६५ | वराह | ६१ |
| विरोचना | ५० | विभावसु | ६५ | वस्तु | ६५ |
| वासर | ५० | वृषाकपि | ६६ | वित्त | ६५ |
| वाह | ५१ | वन्धिसुनु | ६६ | वसु | ६५ |
| वाजिन् | ५० | वृषाकपिसुनु | ६६ | वैश्रवणा | ६६ |
| विहायस् | ५३ | विभावसुसुनु | ६६ | वदन | ६८ |
| वियत् | ५३ | वैश्वानरसुनु | ६६ | वह्न | ६८ |
| व्योमन् | ५३ | विशाख | ६७ | विलोचन | ६६ |
| वयस् | ५४ | विशाखपितृ | ६८ | विषय | ६७ |
| वजिन् | ५७ | विशालाक्ष | ६९ | विभ्रम | ६६ |
| वृत्रहन् | ५८ | वृषभध्वज | ६९ | वक्षौज | १०२ |
| वासव | ५९ | विश्वरूप | ७० | वाच् | १०४ |
| वृषन् | ५९ | विधि | ७२ | वचस् | १०४ |
| वि | ५४ | वेधस् | ७१ | वाणी | १०४ |
| वायुपथ | ५३ | विधातृ | ७२ | वचन | १०४ |
| निष्कर | ५४ | वासुदेव | ७६ | विद्वस् | १११ |
| वायु | ६२ | विरञ्जन | ७२ | विचक्षणा | १११ |
| वात | ६२ | विष्णु | ७४ | वाग्मिन् | १११ |
| वरेण्यु | ६३ | वाणासूदन | ७५ | वीतराग | १११ |
| वायुपुत्र | ६३ | वाण | ७८ | वासस् | ११४ |
| वातपुत्र | ६३ | विंशिखाकृत | ८ | वर्षीयस् | ११५ |
| वरेण्युपुत्र | ६३ | वाहिनी | ८६ | वृषभ | ११५ |
| वायुसख | ६४ | विरथिनी | ८६ | विष्टर | ११३ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-------------|---------|-----------|---------|--------------|---------|
| व, | | व्याज | १३८ | वितथ | १८६ |
| विष्टप | ११३ | व्यूह | १४० | विफल | १८६ |
| विलेपन | ११६ | वृत्तान्त | १३६ | वृथा | १८६ |
| वारुणी | १२१ | व्रात | १३६ | विधुर | १८६ |
| वयःपूर्णा | १२४ | वायुपुत्र | १४७ | व्यसन | १८६ |
| वंश | १२५ | वृकोदर | १४७ | विश्व | १६० |
| वर्द्धमान | ११६ | वलत्त | १४७ | विकल | १६० |
| वर्ग | १२५ | विशदारुण | १५० | विवाह | १६२ |
| वरदा | ११२ | वर्णा | १५५ | वर | १६२ |
| वारली | १२७ | वार्ता | १५६ | विवर | १६३ |
| वृक | १२७ | वियोग | १६२ | वहिष्ठ | १६४ |
| विनयात्मज | १२६ | वर्त्मन् | १६४ | वाणवारण | १६५ |
| वैनतेय | १३० | व्रज | १६५ | वर्मन् | १६५ |
| विषक्तय | १३० | विदग्ध | १६६ | | श. |
| वृजिन | १३२ | वत्स | १६६ | शिष्य | ४ |
| वृजिनुजयिन् | १३२ | विस्मय | १७३ | शास्त्र | ४ |
| वैशमन् | १३२ | विशद | १७३ | श्रृंगिन् | ५ |
| वसति | १३३ | विशारद | १६६ | शिलोच्चय | ५ |
| वस्त्य | १३४ | विक्रम | १७४ | शिखिरिन् | ८ |
| वप्र | १३४ | वेग | १७७ | शास्त्रिन् | ११ |
| वातायन | १३६ | वर्तुल | १८५ | शवर | १४ |
| विन्मन्य | १३७ | वृत्त | १८५ | शर | १५ |
| विद्यमान | १३७ | विशाल | १८५ | शम्पा | १८ |
| व्यपदेश | १३८ | विलम्बित | १८६ | शतपत्र | २१ |
| | | विस्मृता | १८८ | शस्त्रजीविन् | २६ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|---------------|---------|--------------|---------|-------------|---------|
| श. | | शिपिविष्ट | ७० | श्रांशि | १०३ |
| शरीर | ३६ | शाङ्गिन् | ७४ | शीतकृत् | १०६ |
| शत्रु | ४४ | श्री | ७६ | शैमुषी | ११० |
| शशिन् | ४७ | शैलधर | ७६ | शौण्ड | १२२ |
| श्यामा | ४८ | शिलीमुख | ७८ | शिखिन् | १२६ |
| शकुन्ति | ५४ | शर | ७८ | शिखरिडन् | १२७ |
| शकुनि | ५४ | शिलीमुखासन | ७९ | शर्वरीकर | १२८ |
| शक्र | ५७ | शिलीमुख | ८२ | शकुनीश्वर | १२६ |
| शतक्रतु | ५७ | शम्भुविघ्नकर | ८४ | श्रोतस् | १३० |
| शतमन्यु | ६० | शुण्डाल | ८६ | शरण | १३४ |
| शक्रनन्दन | ६० | शार्दूल | ९० | श्वेतवाजिन् | १४३ |
| श्वसनः | ६२ | शरभ | ९० | शक्रनन्दन | १४४ |
| श्वसनपुत्र | ६३ | शूकर | ९१ | शब्दभेदिन् | १४५ |
| श्वसनसख | ६४ | शृंगलिक | ९१ | श्वेत | १४४ |
| शिखिन् | ६४ | शीघ्रगामुक | ९१ | शुचि | १४६ |
| शिखिवाहन | ६६ | शिलोद्भव | ९४ | श्येत | १४६ |
| शक्तिमत् | ६७ | शुक्तिज | ९४ | शुक्ल | १५० |
| शरवणोद्भव | ६७ | श्रिद | ९६ | शुभ्र | १५० |
| शक्तिमत्पितृ | ६८ | श्रवण | ९८ | शशिप्रभ | १५० |
| शरवणोद्भवपितृ | ६८ | श्रोत्र | ९८ | श्राद्धदेव | १४६ |
| शङ्कर | ६८ | श्रव | ९८ | शोणी | १५१ |
| शम्भु | ६८ | श्रुति | ९८ | शासन | १५५ |
| शिव | ६८ | शिरस् | १०० | श्येनी | १५१ |
| शर्व | ६८ | श्वन् | ९२ | शारंगी | १५२ |
| शूलिन् | ७० | शिरोधर | १०१ | शवली | १५२ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|----------|---------|---------------|---------|------------|---------|
| श, | | ष | | नरस्वत् | २६ |
| शश्वत् | १६१ | षडक्षीणा | १७ | सागर | २६ |
| शृङ्गिन् | १६१ | षण्मुख | ६७ | सीमोपकण्ठ | २६ |
| शठ | १६६ | षट्पद | ८२ | स्त्री | ३० |
| शालि | १६८ | पाण्डिक | १६८ | सीमन्तिनी | ३० |
| शकृत्करि | १६९ | षोड | १६९ | सुन्दरी | ३१ |
| शौडीर | १६६ | षड्दशन | १६६ | सती | ३८ |
| शिला | १७१ | स | | साध्वी | ३४ |
| शातकुम्भ | १७२ | संयत | ३ | स्पर्शा | ३५ |
| शार्गा | १७५ | संयमिन् | ३ | स्वैरिणी | ३५ |
| शौय | १७५ | साधु | ३ | संफली | ३५ |
| शाघ्र | १७६ | सिद्धान्त | ४ | सर्वबल्लभा | ३६ |
| शलक्षणा | १७६ | सानुमत् | ८ | सत्रित्री | ३८ |
| शृङ्खलिन | १७८ | सानु | ६ | सद्यिन् | ३८ |
| शतिक | १८६ | स्वामिन् | १० | संहनन | ३८ |
| शलि | १८६ | सालेल | १५ | सुन | ३९ |
| शकल | १९० | सफर | १७ | सुनु | ३९ |
| शलक | १९० | सौदामिनी | १८ | स्तनंधय | ४० |
| शोणित | १९१ | सरोज | २० | सहचरी | ४१ |
| शुषिर | १९३ | सरणीरुह | २० | सग्रीची | ४१ |
| श्वभ्र | १९३ | स्त्रोतस्विनी | २४ | सवया | ४१ |
| शर | १९६ | स्रवन्ती | २४ | सखी | ४१ |
| शिरोरुह | १९६ | सिन्धु | २५ | सस्वन्ध | ४१ |
| श्रेयस् | २०० | सरित् | २४ | सुहृत् | ४१ |
| शिव | २०० | समुद्र | २६ | | |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-------------|---------|----------------|---------|------------|---------|
| स | | समीगर्भ | ६६ | संयत | ८७ |
| सहकृत्वन् | ४२ | समीगर्भसुनु | ६६ | स्तम्भेरम | ८८ |
| सहकारिन् | ४२ | स्वाहापतिसुनु | ६६ | सामज | ८८ |
| सहाय | ४२ | सप्तार्चिःसुनु | ६६ | सिन्धुर | ८६ |
| समवायिक | ४२ | सेनानी | ६६ | सारमेथ | ९२ |
| सनाभिं | ४२ | स्कन्द | ६६ | स्वर्ण | ९३ |
| सगोत्र | ४२ | स्वामिन् | ६७ | सुवर्णा | ९३ |
| सोदर्य | ४२ | सेनानीपितृ | ६८ | स्वार्थ | ९५ |
| स्वस्तु | ४३ | स्कन्दपितृ | ६८ | स्तन | १०२ |
| सपत्न | ४४ | स्वामिपितृ | ६८ | सरस्वती | १०४ |
| सुधासूति | ४७ | स्थाणु | ६८ | स्फातिकृत् | १०५ |
| सूर्य | ५० | सृष्टि | ७१ | स्यन्दन | १०६ |
| सवितृ | ५१ | सहस्रपात् | ७३ | स्तनित | १०५ |
| सपति | ५२ | सौरी | ७५ | संस्तुत | १०८ |
| सप्ताश्व | ५२ | सूर्पकारि | ७७ | संस्थित | १०८ |
| सेन्द्र | ५६ | सुमनस् | ८० | सूरि | १११ |
| स्वर | ५६ | स्मर | ८३ | सभ्य | ११२ |
| स्वर्गे | ५६ | स्वान्त | ८१ | सदस्य | ११२ |
| सुनाशीर | ५७ | साधन | ७६ | सदुचित | ११२ |
| सूत्रामन् | ५७ | समरं | ८७ | सभोचित | ११२ |
| सहस्राक्ष | ५८ | सेना | ८६ | सर्वज्ञ | ११२ |
| समीरण | ६२ | संयुग | ८७ | सन्मति | ११६ |
| सदागति | ६२ | सैन्य | ८९ | समालम्ब | ११८ |
| सप्तार्चिष् | ६४ | संग्राम | ८७ | स्रज् | ११६ |
| स्वाहापति | ६५ | सम्पराय | ८७ | सीधु | १२१ |

| शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । | शब्द | श्लोक । |
|-----------|---------|------------|---------|-----------|---------|
| स. | | समूह | १३६ | समं | १६० |
| सुरा | १२१ | सन्तति | १३६ | साकं | १६० |
| सर्पिष् | १२३ | समुदय | १४० | साद्धे | १६० |
| स्थविर | १२४ | संघ | १४० | सत्रा | १६० |
| संतति | १२५ | संघात | १४० | सजूष | १६० |
| सतान | १२५ | सामिति | १४० | समा | १६० |
| सनातन | १२६ | समीप | १४१ | संवदा | १६१ |
| सर्प | १२६ | सिंहनादिन् | १३८ | सतत | १६१ |
| सुपर्णा | १२८ | समीप | १४१ | सदा | १६१ |
| सर्पवैरिण | १२६ | सीर | २४२ | स्नेह | १६१ |
| सुकृत | १३१ | सव्यसाचिन् | १४४ | संहित | १६३ |
| सत्कृत | १३१ | सूनिर्मोक | १४४ | सहित | १६३ |
| सदन | १३२ | समवर्तिन् | १४५ | सम्पृक्त | १६३ |
| सद्मन् | १३२ | सूरसूनु | १४६ | सम्भृत | १६३ |
| स्थान | १३३ | सोमवंश्य | १४८ | संस्कृत | १६४ |
| साल | १३५ | संतमस | १४६ | समवेत | १६४ |
| सौध | १३५ | सित | १४६ | साराणि | १६४ |
| सर्म | १३६ | सन्निधि | १४१ | सञ्चर | १६४ |
| सवर्णा | १३६ | साधुवाद | १५४ | संज्ञा | १६७ |
| सजाति | १३६ | संदेश | १५६ | स्तम्बकरि | १६८ |
| सदृश | १३६ | स्तब्ध | १५६ | स्तब्ध | १६८ |
| सदृश | १३६ | साम्प्रत | १५७ | स्तेन | १७० |
| सदृश | १३६ | सुचिरन्तन | १५८ | साधीयस् | १७२ |
| सधर्म | १३७ | सपदि | १५८ | सुष्ठु | १७२ |
| सरूप | १३७ | सह | १६० | स्फुट | १७३ |
| समाज | १३८ | | | | |

